Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीता सुधा

गोपाललाल बर्मन

... Vidyalaya Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोपाल लाल बर्मन

पिता–स्वर्गीय अनन्तप्रसादजी बर्मन

जन्म–वाराणसी में १३ जनवरी १९१९

गीता, गांधी, गंगा तथा गायके भक्त

दृष्टिहीनों की सेवा में रुचि।

श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार अन्ध विद्यालय

वाराणसी के उपाध्यक्ष

प्रथम पुस्तक

'लोकप्रिय गीता'

१९८० में प्रकाशित

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

1.4
VhP2

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1175

पांणिनी कन्या महाविद्यालय
को सादर भेंट

गोपाललाल

25. 11. 89.

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

117 क

महर्षि-पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान
तिथी.........
पु०सं०......745
भारती पुस्तकालय

गीता

सुधा

एक सौ प्रश्न—गीता द्वारा उत्तर

पदच्छेद, समश्लोकी अनुवाद, भावार्थ

•

लेखक

गोपाल लाल बर्मन

•

प्रस्तावना

नन्दलाल टांटिया

•

प्रकाशक

पंचवटी कम्पनी

भेलूपुर वाराणसी - २२१०१०

फोन ५४२८८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान
तिथी ......
प०सं० 1746
पुस्तकालय
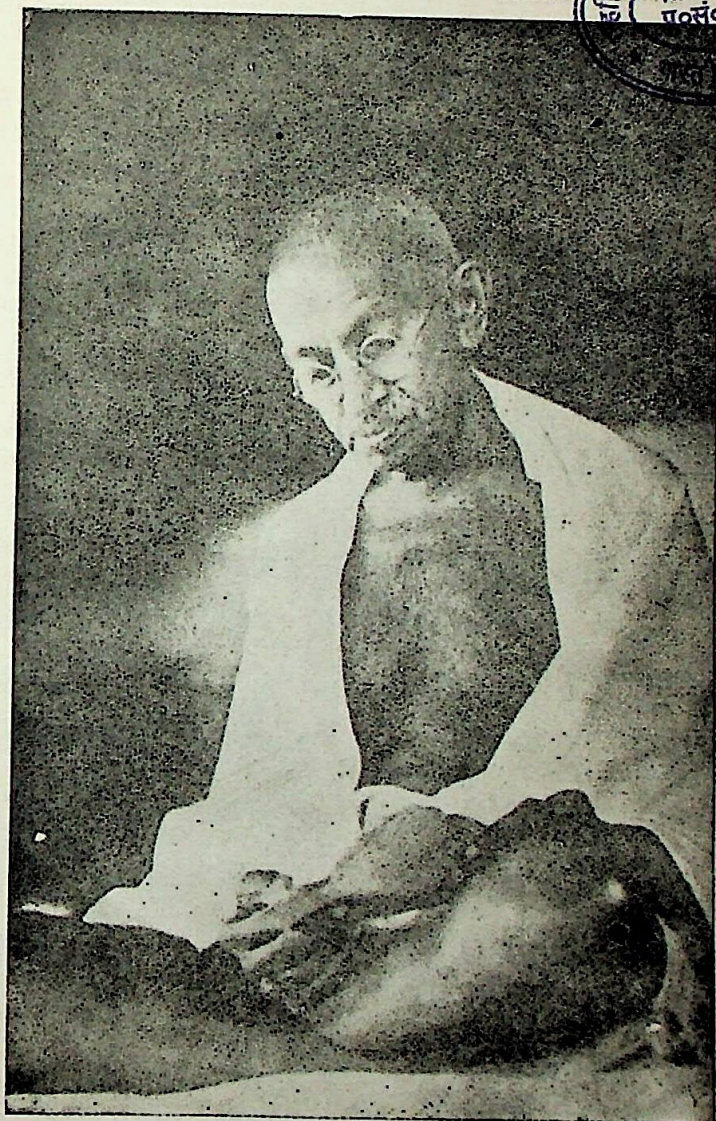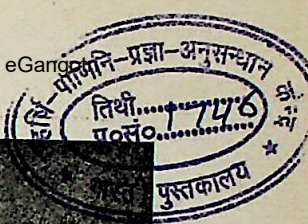
मेरे लिए गीता आध्यात्मिक कोश है। मैं जब कार्याकार्य की दुविधा में पड़ जाता हूँ, तब मैं इसी का आश्रय लेता हूँ और अबतक इसने मुझे कभी निराश नहीं किया।

महात्मा गाँधी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीता-माता को प्रणाम

मेरी माता को प्रणाम।
गीता माता को प्रणाम॥

है धर्म शास्त्रों का सार।
सुपथ का खोले द्वार॥

छोड़ो आसक्ति न कर्म।
निष्काम कर्म ही धर्म॥

त्यागा जिसने स्वकर्म।
उसका पथ दुर्गम॥

जिसे मिला है जो काम।
पूरा कर पूजे श्याम॥

करो यज्ञ तप दान।
लगाओ ईश में ध्यान॥

करो सबका सम्मान।
सब में है भगवान॥

मेरी माता को प्रणाम।
गीता माता को प्रणाम॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीता-सुधा कैसे पढ़ें ?

गीता व्यावहारिक जीवन का निर्देश करती है। कुरुक्षेत्र—कर्मक्षेत्र को त्यागो मत। कर्मक्षेत्र को धर्मक्षेत्र बनाओ। प्रवृत्ति को त्यागो मत, उसे परमार्थ की तरफ मोड़ दो। चिन्तन छोड़ो मत। काम का चिन्तन छोड़ राम का चिन्तन करो। जीवन के सिद्धान्त को जान लो और जीने की कला सीखो।

गीता का उद्देश्य मानव जीवन की समस्याओं को सुलझा कर उसे सुखी बनाना है। गीता मानव हृदय में उठनेवाले विविध प्रश्नों का समाधान प्रस्तुत करती है।

'गीता-सुधा' में एक सौ प्रश्नों का गीता के १३६ श्लोकों द्वारा उत्तर संग्रहित है। इस पुस्तक में १३६ श्लोकों का समावेश हुआ है। दूसरे अध्याय के १७, तीसरे के ११, चौथे के ४, पाँचवें के ७, छठें के १३, सातवें के ४, आठवें के ३, नवें के ४, दसवें का १, ग्यारहवें के ४, बारहवें के ११, तेरहवें के १०, चौदहवें के २, पन्द्रहवें के २, सोलहवें के १३, सत्रहवें के १५ और अठारहवें के १५ श्लोक उद्धृत हैं। उद्धृत श्लोकों की अध्याय तथा श्लोक संख्या दी गयी है। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर में गीता के श्लोक, पदच्छेद, समश्लोकी अनुवाद तथा भावार्थ दिया गया है।

पदच्छेद क्यों ?

पदच्छेद द्वारा पदों को पृथक करके पढ़ने से संस्कृत न जानने वाले प्रयत्नशील व्यक्ति को गीता के श्लोकों को समझना सुगम हो जाता है। सभी श्लोकों का पदच्छेद श्लोकों के बाद दिया गया है। कठिन संस्कृत शब्दों का अर्थ पुस्तक के अन्त में 'गीता संस्कृत-हिन्दी कोश' में दिया गया है। पाठक प्रश्न संख्या से शब्दों का अर्थ ज्ञात कर सकता है। गीता की संस्कृत सरल है। मंशा यह है कि संस्कृत न जानने वाला श्रद्धालु पाठक भी पदच्छेद द्वारा श्लोकों का मनन कर सके।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समश्लोकी अनुवाद

गीता में कुल ७०० श्लोक हैं। ६४५ श्लोक अनुष्टुप और ५५ श्लोक त्रिष्टुप छन्द के हैं। पद्य को छन्द कहते हैं। प्रत्येक छन्द के प्रायः चार चरण होते हैं। चरण को पाद भी कहते हैं। अनुष्टुप छन्द के प्रत्येक चरण में आठ अक्षर होते हैं और पूरा श्लोक ३२ अक्षरों का होता है। त्रिष्टुप छन्द के प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर होते हैं और पूरा श्लोक ४४ अक्षरों का होता है। आधे अक्षरों की गणना नहीं की जाती।

उस अनुवाद को समश्लोकी अनुवाद कहते हैं जिसमें मूल के भाव का निर्वाह करते हुए मूल के समान अक्षर संख्या हो। 'गीता-सुधा' में गीता के जितने श्लोक उद्धृत हैं उनका समश्लोकी अनुवाद प्रस्तुत किया गया है।

प्रश्न संख्या १२, १३, १४ और १५ में उद्धृत गीता के दूसरे अध्याय के श्लोक संख्या ५७, ५८, ६२, ६३, ६७ तथा ७० का समश्लोकी अनुवाद सर्व-सेवा-संघ प्रकाशन वाराणसी द्वारा प्रकाशित 'सामूहिक प्रार्थना' से लिया गया है।

पूज्य गांधीजी और विनोबाजी के आश्रमों में तथा अन्यत्र भी गीता के दूसरे अध्याय के ५४ से ७२ तक श्लोकों के समश्लोकी अनुवाद का पाठ किया जाता था। स्थितप्रज्ञ-दर्शन के १९ श्लोक और उनका समश्लोकी अनुवाद बहुत प्रचलित हो चुका है।

समश्लोकी अनुवाद को सुविधा से पढ़ने के हेतु प्रायः आठ अक्षरों के बाद या एक चरण के बाद जरा अधिक स्थान छोड़ा गया है।

गीता-माता संस्कृत में बोलती हैं। माता की वाणी में जो प्रभाव, रस और माधुर्य है उसका सतांश भी समश्लोकी अनुवाद में नहीं आ सकता। फिर भी समश्लोकी अनुवाद का महत्व है। पदच्छेद, समश्लोकी अनुवाद और भावार्थ श्लोकों को हृदयंगम करने में सहायता देते हैं।

हिन्दी में कवि श्री सियारामशरण गुप्त का किया समश्लोकी अनुवाद जो 'गीता-संवाद' के नाम से प्रकाशित हुआ है, मैंने पढ़ा है। हिन्दी में और कोई समश्लोकी अनुवाद मुझे प्राप्त नहीं हुआ। मराठी में 'गीताई

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिन्तनिका' नाम से विनोबाजी ने समश्लोकी अनुवाद किया है जिसका हिन्दी संस्करण भी उपलब्ध है।

'गीता-सुधा' में गीता-माता अपने नये परिवेश में, नयी रूप-सज्जा में, दर्शन देती हैं। सब कुछ वही है जो सनातन है, शाश्वत है।

संस्कृत भाषा का ज्ञान विद्वानों तक सीमित हो जाने के कारण जनसाधारण से गीता-माता का अलगाव होता जा रहा है। विभिन्न माध्यमों से गीता-दर्शन को जनसाधारण तक पहुंचाने की आवश्यकता है। गीता सार्वकालिक सार्वजनिक धर्म ग्रन्थ है।

गीता में कर्म भक्ति और ज्ञान का समन्वय तो है ही—गीता से शान्तिप्रद स्वस्थ मनोरंजन भी होता है। गीता उबानेवाली घिसी-पिटी बात नहीं कहती। शाश्वत सत्य की बात कहती है, जिससे तनाव घटता है, उदासी मिटती है, शोक-मोह भागता है और सुपथ पर चलने की प्रेरणा और शक्ति मिलती है।

आप 'गीता-सुधा' को अपने कार्यालय या घर में रखें। जब भी थोड़ा अवकाश मिले किसी एक प्रश्न का उत्तर पढ़ें। चिन्तन-मनन करें। सुभाषितों को याद करलें। गीता-सुधा आपको गीता-माता के अध्ययन की प्रेरणा दे।

भाई श्री नन्दलालजी टांटिया ने इस पुस्तक की प्रस्तावना लिखने की कृपा की है। मैं कृतज्ञ हूँ।

आचार्यों और विद्वानों ने 'गीता-सुधा' पढ़कर अपनी सम्मति दी है। गुणी-जनों के वचनों से 'गीता-सुधा' अलंकृत हुई है। मैं उन्हें प्रणाम करता हूँ, पुनः सादर प्रणाम करता हूँ।

वाराणसी

१३-१०-८३

गोपाल लाल बगड़

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्तावना

सम्पूर्ण भारतीयता भगवद्वाणी श्री गीता-माता से आलोकित है। इस ज्योति में चलना ही श्रेय का पंथ है। अपनी-अपनी भावना के अनुसार पुष्पांजलि समर्पित करना ही भक्तों का उद्देश्य है। गीताजी का एक-एक शब्द परम दिव्य है एवं भारतीय वाङ्मय का सारभूत तत्त्व है। श्री गोपाल लाल बर्मन द्वारा नवनीत रूप में प्रस्तुत 'गीता-सुधा' अत्यन्त उपादेय है। आज के व्यस्त जीवन में मानव-मन मोटी पोथियों से घबड़ाता है। वह संश्लिष्ट एवं लघुकाय पुस्तकों की ओर आर्कषित होता है। युग की प्रवृत्ति के अनुरूप शाश्वत महत्त्व के ग्रन्थ को संक्षिप्त एवं सुबोध शैली में उपस्थापित कर बर्मनजी ने सुनिश्चित ही प्रशंसनीय कार्य किया है।

महत्त्वपूर्ण श्लोकों की भावपूर्ण व्याख्या सबके लिये चिन्तामणि है। पृथक शीर्षक के अन्तर्गत श्लोकों के पदच्छेद, समश्लोकी अनुवाद एवं तुलनात्मक विवेचन से पुस्तक बहुत उपादेय हो गयी है। देववाणी में संचित भाव को जन भाषा में सुस्पष्ट करने की मनोहारी कला स्तुत्य है जिसके चलते यह कार्य अप्रतिम हो जाता है। 'गीता के सुभाषित', 'गीता-माता' के अतिरिक्त 'गीता संस्कृत-हिन्दी कोश' से सुशोभित ग्रन्थ संग्रहणीय है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय साध्य और श्रम साध्य इस सत्कार्य से बर्मनजी ने समाज को उपकृत किया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'गीता-सुधा' द्वारा भारतीय संस्कृति के भव्य स्वरूप को समझने में सुविधा होगी। लेखक का यह भक्ति पूर्ण प्रयास जनमानस में प्रभु भक्ति की हिलोरें दे, यही प्रभु से प्रार्थना है।

ओल्ड कोर्ट हाउस कार्नर
कलकत्ता—७००००१ नन्दलाल टांटिया
४–१०–८३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्वानों की सम्मतियाँ

विश्वभर में यदि कोई ऐसा ग्रन्थ है जो समस्त जीवन के रहस्य का उद्घाटन करता है तो वह निःसन्देह गीता है। इसमें ज्ञान, भक्ति और कर्म का अद्भुत समन्वय है। इसका उपदेश निर्वाण और संसार का सन्धिस्थल है, अन्धकारमय जीवन के लिए एक प्रकाशस्तम्भ है।

यज्ञ, कर्म, भक्ति, ज्ञान, ध्यान—सबका इसमें एक व्यापक स्वरूप देखने के लिए मिलता है। इसकी अनेक व्याख्याएं हुई है और आगे भी होंगी। यह वह रत्नाकर है जिसमें जितनी ही डुबकी लगाई जाय उतनी ही बार नए रत्न हाथ में आते हैं।

'गीता-सुधा' के लेखक केवल एक व्यवसायी नहीं हैं। उनमें व्यवसायात्मिका बुद्धि जग गई है। वह गीता का केवल पाठ नहीं करते, उसे जीते भी हैं।

प्रस्तुत पुस्तक की कुछ विशेषताएं हैं, जिनके कारण यह सबके लिए उपादेय है—

१. लेखक ने समस्त गीता का अध्ययन करके सौ प्रमुख प्रश्न चुने हैं और उनका उत्तर गीता में क्या मिलता है इसका प्रतिपादन किया है।

२. प्रत्येक श्लोक का उन्होंने हिन्दी में समश्लोकी अनुवाद दिया है। इस समश्लोकी अनुवाद में प्रायः उतने ही शब्द हैं जितने मूल में।

३. पदच्छेद में जितने शब्द आए हैं उनका उन्होंने अन्त में हिन्दी में सरल अनुवाद दिया है जिससे साधारण पाठक जो संस्कृत नहीं जानता है, संस्कृत का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

४. यत्र तत्र लेखक ने रामचरितमानस के ऐसे तुलनात्मक पद दिए हैं जिनसे गीता के भाव को हृदयंगम करने में बड़ी सहायता मिल सकती है।

आशा है ऐसे संस्करण का जनता अभिनन्दन करेगी।

(ठाकुर) जयदेव सिंह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२)

भाई गोपाल लाल जी की 'लोकप्रिय गीता' का अवलोकन किया था— 'गीता-सुधा' भी देखी। युगधर्मानुसार सरल भाषा में 'लोकप्रिय गीता' एवं गीता के सूत्रों का संकलन दोनों उनकी अच्छी कृति हैं। इसकी सार्थकता तभी हो सकती है जब जनता इसका अध्ययन मनन एवं आचरण करे। लेखक ने पढ़ा, समझा एवं विचार कर समाज के सामने व्यक्त कर दिया। अब अपनाना, ग्रहण करना समाज पर निर्भर है। प्रभु से यही प्रार्थना है कि यह पुस्तक सभी को लाभान्वित करे।

श्रीवल्लभगीता श्रीकृष्ण भवन **गोस्वामी शरदवल्लभा बेटीजी**
चौखम्भा, वाराणसी

(३)

श्री गोपाल लाल बर्मन ने गीता के ऊपर दूसरी किताब लिखी है। दूसरी किताब का नाम भी बहुत योग्य रखा है 'गीता-सुधा'। आपने गीता के ७०० श्लोकों में से १३६ श्लोकों का चयन किया है जिससे गीता का सन्देश कोई भी व्यक्ति आसानी से समझ सके। गीता में चर्चित अनेक विषयों में से आपने १०० विषय चुने हैं और हर एक श्लोक का पदच्छेद दिया है और समश्लोकी अनुवाद भी किया है। इस पुस्तक द्वारा जो संस्कृत से परिचित नहीं हैं वे भी संस्कृत श्लोकों को आसानी से समझ सकेंगे। आपने गीता से ३३ सुभाषित चयन कर इसमें सम्मिलित किये हैं। गीता के सुभाषित तो गीता के महावाक्य हैं।

बर्मनजी का प्रयत्न स्तुत्य है। इससे ऐसे लोगों को गीता के अध्ययन में रुचि होगी जो गीता पढ़ते नहीं हैं। गीता के महासागर में से सुन्दर रत्न प्राप्त् कर लेखक ने जनता के पास रखे हैं।

१-१०-८३ **(डा०) रोहित मेहता**

(४)

श्री मद्भगवद्गीता एक परम रहस्यमय ग्रन्थ है। सम्पूर्ण दर्शन और ज्ञान का संग्रह यदि किसी एक ग्रन्थ में मिलता है तो वह 'गीता' ही है। समुद्र रहस्यमय था, कितने ही दृष्टिकोण से अब भी है। वैज्ञानिक निरन्तर खोज में लगे हैं और प्राणिमात्र की भौतिक आवश्यकताओं को पूर्ण करने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में सफल होते जा रहे हैं। इतिहास से पूर्वकाल में भी समुद्र का मन्थन हुआ था। अनेक रत्न मिले और अमृत भी। पर इसके लिए प्रयत्न करना पड़ा और परिश्रम भी। बगैर इसके परिणाम सुखद नहीं हो सकता।

'गीता-सुधा' पढ़कर सर्वोपरि यह विचार ही मन में आया। गीता का सन्देश हृदय में रखकर लेखक ने सार में से भी सार को निकाला और 'सुधा' को साधारण सूझबूझ वाले व्यक्ति के लिए ग्राह्य स्वरूप में प्रस्तुत किया है। श्री गोपाल लाल बर्मन ने जो प्रयत्न किया है उससे यह भली-प्रकार अनुभव होता है कि उन्होंने गीता का गहन अध्ययन ही नहीं किया पर व्यावहारिक दृष्टि से मानव जीवन की जटिलताओं और आवश्यकताओं के सन्दर्भ में उपयुक्त श्लोकों को न केवल चुना ही वरन् उनका देवनागरी में पद्यानुवाद कर सराहनीय सेवा की है। इस प्रकार 'देववाणी' सही माने में नागरी बन गई।

लेखक ने संस्कृत श्लोकों का पदच्छेद भी दिया है जिससे संस्कृत सरल हो गई है। पदों में प्रस्तुत करने से उसका माधुर्य और हिन्दी में अनुवाद ने उसमें निहित ज्ञान को सहज बना दिया है। प्रशंसनीय बात यह है कि कितने सन्दर्भ रामचरितमानस की पंक्तियों के साथ प्रस्तुत किये गए हैं। भावना, ज्ञान और काल का कितना अनुपम योग उत्पन्न हो गया है। आज के वैज्ञानिक या यों कहा जाये कि बौद्धिक युग में बिना काल के सन्दर्भ के कोई भी विचार या तथ्य जल्दी स्वीकार नहीं किया जाता। इस प्रकार 'गीता-सुधा' एक अनुपम और सफल प्रयास है।

गांधीजी की 'गीता माता' से भी कुछ सामयिक उद्धरण सम्मिलित कर लेखक ने इस पुस्तक को सारगर्भित बना दिया है। साथ में संस्कृत-हिन्दी कोश पाठकों के लिए लाभदायी सिद्ध होगा।

मैं हृदय से लेखकको इस प्रयास के लिए बधाई देता हूँ और विश्वास करता हूँ कि 'गीता-सुधा' भगवान की वाणी को एक बार फिर जन जीवन के कान में पहुँचा देने में सफल होगी।

(डा०) इकबाल नारायण
कुलपति
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

वाराणसी
१० अक्टूबर ८३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(५)

श्री गोपाल लाल बर्मन के द्वारा प्रणीत 'गीता-सुधा' एक उत्तम और सामयिक ग्रन्थ रत्न है। 'गीता-सुधा' का श्री बर्मन ने एक नवीन दृष्टि कोण से प्रणयन किया है। इस ग्रन्थ के अध्ययन से गीता के मुख्य तत्त्वों का ज्ञान होता ही है। एक सौ प्रश्नों का उचित समाधान गीता के पद्यों से प्राप्त होता है।

ग्रन्थकार ने उद्‌धृत सीमित पद्यों का पदच्छेद, हिन्दी में उनका अर्थ और पद्योंका उसी छन्द में सुन्दर पद्यानुवाद कर अपने ग्रन्थको सुशोभित किया है। यह अनुवाद अध्ययनशील बालक, नारी समाज एवं ग्रामीण-जनों के लिए उपकारी सिद्ध होगा। लेखक का यह भी दृष्टिकोण प्रतीत होता है कि संस्कृत से हिन्दी या हिन्दी से संस्कृत सीखने के लिए यह ग्रन्थ साधन बन सके। अतएव ग्रन्थके अन्तमें 'गीता संस्कृत-हिन्दी कोश' प्रकाशित किया है। रोचक एवं ज्ञानप्रद गीता के सुभाषितों का संग्रह भी प्रकाशित किया है।

मैं जगन्नियन्ता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि यह ग्रन्थ भारत के सभी शिक्षण संस्थाओं में स्थान प्राप्त करे, इसके अध्ययन से देशवासी आध्यात्मिक शक्ति संपन्न हों।

हनुमानघाट, वाराणसी — (डा० पी० एन०) **पट्टाभिराम शास्त्री**
भाद्रपद कृष्ण १३, सम्वत् २०४० — (विद्यासागर, पद्मभूषण)

(६)

किसी भी विषयको अधिक स्पष्ट तथा हृदयग्राही बनाने के लिये प्राचीन तथा आधुनिक शिक्षाशास्त्र में भी प्रश्नोत्तर प्रणालीको अधिक उत्तम माना गया है। संस्कृत साहित्य में इस प्रकार की अनेक पुस्तकें लिखी गयी हैं। प्रस्तुत पुस्तक में श्री बर्मन ने भी एक सौ प्रश्नों के उत्तर के रूप में गीता के कुछ श्लोकोंका संग्रह तथा अनुवाद कर गीता के सर्व-जनोपयोगी ज्ञातव्य विषयों को सुबोध और चित्ताकर्षक बनाने का जो श्लाघनीय प्रयास किया है एतदर्थ वे हम सभी गीता तथा संस्कृत प्रेमियों के हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं।

बर्मनजी की बहुप्रशंसित प्रथम पुस्तक 'लोकप्रिय-गीता' के बाद उनकी यह दूसरी पुस्तक गीता के ज्ञानसागर का लघु संग्रह है। श्लोकों के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पदच्छेद, समश्लोकी अनुवाद, भावार्थ तथा कहीं-कहीं रामचरित मानस की तुलना के कारण पुस्तक अत्यन्त सुबोध तथा हृदयग्राही बन गई है।

इस सुधा का घर-घर में प्रचार तथा पान हो, यह हमारी हार्दिक कामना है।

सार्वभौम संस्कृत प्रचार कार्यालय
वाराणसी

वासुदेव द्विवेदी शास्त्री

(७)

श्रीमद्भगवद्गीता भारतीय वाङ्मयार्णव का अद्वितीय ग्रन्थ रत्न है। यह उपनिषदों का सार है। उपनिषदों को वेद एवं वेदान्त भी माना जाता है, इसलिए गीता वेद-वेदान्त का सारभूत है। देशी एवं विदेशी भाषाओं में जितने गीता के भाष्य हुए हैं उतने विश्व साहित्य में किसी भी ग्रन्थ के नहीं हुए हैं। प्रमुख दार्शनिकों, चिन्तकों, राजनीतिज्ञों, सन्तों सम्प्रदाय प्रवर्तकों, समाज सुधारकों, देशभक्तों आदि सभी ने गीता के ऊपर भाष्य रचनायें की हैं। इस समय देश एवं विदेश में विख्यात महात्माओं ने भी गीता के विषय में अपने विचार व्यक्त किये हैं। भारतीय धर्मानुयायी विद्वानों के अतिरिक्त अन्य धर्मावलम्बी विद्वानों ने भी गीता के ऊपर अपने विचार व्यक्त किये हैं। गीता ही एक ऐसा ग्रन्थ है, जिसको किसी धर्म विशेष या सम्प्रदाय विशेष का ग्रन्थ नहीं माना जा सकता। इसमें किसी धर्म विशेष या सम्प्रदाय विशेष के सिद्धान्त का ही मुख्य रूप से प्रतिपादन नहीं है, इसलिए सभी भाष्यकर्त्ताओं ने अपने-अपने सिद्धान्त का प्रतिपादन गीता के अनुसार किया है, एवं उसको अपने सम्प्रदाय का प्रमुख ग्रन्थ माना है।

भारतीय वाङ्मय के अध्येता, अपने अध्ययन को तब तक पूरा नहीं मानते जब तक वे गीता का अध्ययन न कर लें या उसके ऊपर अपनी लेखनी न चला दें। श्री गोपाल लाल बर्मन जी गीता के नैष्ठिक पुजारी हैं; और इन्होंने भी गीता पर व्याख्या लिखकर अपनी लेखनी को पवित्र किया है। "लोकप्रिय गीता" के नाम से हिन्दी व्याख्या युक्त गीता का प्रकाशन इन्होंने किया है, जो कि समाज में लोक प्रिय है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री बर्मन लेखनी के धनी हैं। गम्भीर भावों को भी सरल एवं सुगम्य रूप से प्रस्तुत करना इनकी अपनी कला है। "गीता-सुधा" इनकी दूसरी कृति है। इसमें बर्मनजी ने सौ प्रश्न उठाये हैं तथा गीता के द्वारा उनका समाधान प्रस्तुत किया है। प्रश्नों का समाधान ही इस ग्रन्थ की सुधा है। ग्रन्थ के अन्त में गीता से कुछ सुभाषितों एवं महापुरुषों के वचनों का भी संग्रह किया है।

इस संग्रह के कारण ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी बन गया है। श्री बर्मन समर्पित भाव से गीता का कार्य कर रहे हैं। समाज को इनसे बहुत सी आशायें हैं और ये अभी गीता के माध्यम से समाज को बहुत कुछ प्रदान करेंगे।

डा० बाबूलाल मिश्र
प्राध्यापक
भारतीय दर्शन एवं धर्म
एवं
मानित मन्त्री, गीता समिति
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

वाराणसी
१०-१०-८३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमुख सहायक ग्रन्थ

पुस्तक	लेखक	प्रकाशक
गीता-माता	महात्मा गांधी	सस्ता साहित्य मंडल, नयी दिल्ली
श्रीमद्भगवद्गीता पदच्छेद और अन्वय सहित	—	गीता प्रेस, गोरखपुर
गीताई चिन्तनिका	विनोबा	सर्व-सेवा-संघ प्रकाशन राजघाट, वाराणसी
गीता-संवाद	सियारामशरण गुप्त	साहित्य-सदन चिरगाँव, झांसी
गीता दोहन	रघोत्तम शुक्ल	पद्मा शुक्ला, मेंहदी टोला, अलीगंज, लखनऊ
श्रीहरि गीता	दीनानाथ भार्गव दिनेश	मानवधर्म कार्यालय, दरियागंज, दिल्ली
सामूहिक प्रार्थना	—	सर्वसेवा संघ प्रकाशन राजघाट, वाराणसी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुक्रम

पृष्ठ संख्या

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री राम

गीता-सुधा

१

कौन शोक नहीं करता ?

अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे ।
गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः ।।२।११

पदच्छेद

अशोच्यान्, अन्वशोचः, त्वम्, प्रज्ञावादान्, च, भाषसे ।
गतासून्, अगतासून्, च, न, अनुशोचन्ति, पण्डिताः ।।

समश्लोकी अनुवाद

अशोच्य का कर शोक तू बोलता है ज्ञानी-सा ।
जीते-मरे किसी को भी शोचते पण्डित नहीं ।।

तू शोक न करने योग्यका शोक करता है और पंडिताईके वचन बोलता है । पंडितजन मृत और जोवित किसीके लिए भी शोक नहीं करते ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२

किसको मोह नहीं होता ?

देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा ।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति ।।२।१३

पदच्छेद

देहिनः, अस्मिन्, यथा, देहे, कौमारम्, यौवनम्, जरा ।
तथा, देहान्तरप्राप्तिः, धीरः, तत्र, न मुह्यति ।।

समश्लोकी अनुवाद

देही देह में ज्यों पाता कौमार यौवन जरा ।
त्योंही पाता अन्य देह होता मोह न धीर को ।।

देहधारी को जैसे इस शरीर में बालपन, जवानी और बुढ़ापा प्राप्त होता है, उसी प्रकार दूसरी देह प्राप्त हुआ करती है। उसमें धीर पुरुषको मोह नहीं होता।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३

क्या अनित्य है ?

मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः ।
आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत ।।२।१४

पदच्छेद

मात्रास्पर्शाः तु, कौन्तेय, शीतोष्णसुखदुःखदाः ।
आगमापायिनः, अनित्याः, तान्, तितिक्षस्व, भारत ।।

समश्लोकी अनुवाद

इन्द्रिय-विषय देते सुख-दुःख सर्दी-गर्मी ।
ये अनित्य आते-जाते अर्जुन तू सह उन्हें ।।

इन्द्रियोंके विषय सर्दी-गर्मी सुखःदुःख देनेवाले होते हैं। वे अनित्य होते हैं—आते हैं और चले जाते हैं। अर्जुन ! तुम उन्हें सहन करो।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४

किसका नाश नहीं होता ?

न जायते म्रियते वा कदाचिन्-
नायं भूत्वा भविता वा न भूयः ।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥२।२०

पदच्छेद

न, जायते, म्रियते, वा, कदाचित्,
न, अयम्, भूत्वा, भविता, वा, न, भूयः ।
अजः नित्यः, शाश्वतः, अयम्, पुराणः,
न, हन्यते, हन्यमाने, शरीरे ॥

समश्लोकी अनुवाद

आत्मा न जन्मता न मरता ही
न होकर है इसे फिर होना ।
अज, नित्य, शाश्वत, पुरातन,
देह-नाश से भी न नष्ट होता ॥

यह आत्मा कभी जन्मता नहीं है, मरता नहीं है। यह था और भविष्यमें नहीं रहेगा, ऐसा भी नहीं है। यह अजन्मा, नित्य, शाश्वत और पुरातन है। शरीरका वध हो जाय तब भी आत्माका नाश नहीं होता।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५

आत्मा को नया शरीर कब मिलता है ?

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥२।२२

पदच्छेद

वासांसि, जीर्णानि, यथा, विहाय,
नवानि, गृह्णाति, नरः अपराणि ।
तथा, शरीराणि, विहाय, जीर्णानि,
अन्यानि, संयाति, नवानि, देही ॥

समश्लोकी अनुवाद

जैसे वस्त्र पुराना त्याग कर
नर नया धारण करता है ।
तैसे ही देही जीर्ण तन त्याग,
नया शरीर करता है प्राप्त ॥

जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर नया धारण करता है, वैसे देहधारी (आत्मा) जीर्ण हुए देहको त्यागकर दूसरा नया देह पाता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६

किसे आग नहीं जला सकती ?

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ।।२।२३

पदच्छेद

न, एनम्, छिन्दन्ति, शस्त्राणि, न, एनम्, दहति, पावकः ।
न, च, एनम्, क्लेदयन्ति, आपः, न, शोषयति, मारुतः ।।

समश्लोकी अनुवाद

न शस्त्र काटता इसे न अग्नि सकती जला ।
जल भिगो पाता नहीं न वायु सकता सुखा ।।

आत्माको शस्त्र नहीं काट सकता, इसे आग नहीं जला सकती। इसे पानी गीला नहीं कर सकता और हवा सुखा नहीं सकती है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७

मृत्यु का शोक करना क्यों उचित नहीं है ?

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च ।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ।।२।२७

पदच्छेद

जातस्य, हि, ध्रुवः, मृत्युः, ध्रुवम्, जन्म, मृतस्य, च ।
तस्मात्, अपरिहार्ये, अर्थे, न, त्वम्, शोचितुम्, अर्हसि ।।

समश्लोकी अनुवाद

जन्मा निश्चित मरता मरा निश्चित जन्मता ।
अनिवार्य जो उसका शोक योग्य नहीं तुझे ।।

जो जन्मता है, उसकी मृत्यु निश्चित है, और जो मरती है उसका जन्म निश्चित है। अतः जो अपरिहार्य है उसका शोक करना उचित नहीं है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८

कौन सर्वदा अवध्य है ?

देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य भारत ।
तस्मात्सर्वाणि भूतानि न त्वं शोचितुमर्हसि ।।२।३०

पदच्छेद

देही, नित्यम्, अवध्यः, अयम्, देहे, सर्वस्य, भारत ।
तस्मात्, सर्वाणि, भूतानि, न, त्वम्, शोचितुम्, अर्हसि ।।

समश्लोकी अनुवाद

सब शरीरों में आत्मा सर्वदा ही अवध्य है ।
अतः प्राणिमात्र हेतु शोक योग्य नहीं तुझे ।।

सब प्राणियोंकी देहमें विद्यमान आत्मा सर्वदा ही अवध्य है । इसलिये समस्त प्राणियोंके लिए तुझे शोक करना उचित नहीं है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९

कब पाप नहीं लगेगा ?

सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि ।।२।३८

पदच्छेद

सुखदुःखे, समे, कृत्वा, लाभालाभौ, जयाजयौ ।
ततः, युद्धाय, युज्यस्व, न, एवम्, पापम्, अवाप्स्यसि ।।

समश्लोकी अनुवाद

सुख-दुःख मान सम लाभ-हानि जीत-हार ।
तू युद्ध में प्रवृत्त हो तो पाप न लगे तुझे ।।

सुख और दुःख, लाभ और हानि, जय और पराजय को समान समझकर युद्ध के लिए (स्वकर्म के लिए) तैयार हो। ऐसा करने से तुझे पाप नहीं लगेगा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०

मनुष्य के अधिकार में क्या है ?

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ।।२।४७

पदच्छेद

कर्मणि, एव, अधिकारः, ते, मा, फलेषु, कदाचन ।
मा, कर्मफलहेतुः, भूः, मा, ते, सङ्गः, अस्तु, अकर्मणि ।।

समश्लोकी अनुवाद

कर्म का अधिकारी तू फल न तेरे हाथ में ।
न हो तुझे फलाकांक्षा न हो प्रीति अकर्म में ।।

तुम्हें कर्म करनेका अधिकार है । उससे उत्पन्न होनेवाले फलमें कभी भी तुम्हारा अधिकार नहीं है । तुम फल की इच्छा रखनेवाले मत हो । अकर्ममें भी तुम्हारी आसक्ति न हो ।

मनुष्य को चाहिए कि कर्म करे, फलाशा को छोड़ दे, पर कर्म छोड़ने का आग्रह न करे । फलकी लालसाको त्याग कर कर्तव्य-कर्म अवश्य करे ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

११

योग किसे कहते हैं ?

योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनंजय ।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ।।२।४८

पदच्छेद

योगस्थः, कुरु, कर्माणि, सङ्गम्, त्यक्त्वा, धनंजय ।
सिद्ध्यसिद्ध्योः, समः, भूत्वा, समत्वम्, योगः, उच्यते ।।

समश्लोकी अनुवाद

कर्म कर अनासक्त पार्थ होकर योगस्थ ।
सम सिद्धि-असिद्धि में सम-भाव ही योग है ।।

हे धनंजय ! आसक्ति छोड़कर, सफलता मिले या विफलता दोनों को समान मानकर, योगस्थ हो करके कर्म कर । समता की मनोवृत्ति को ही योग कहते हैं ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२

किसकी बुद्धि स्थिर होती है ?

यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम् ।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।।
यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।।२।५७-५८

पदच्छेद

यः, सर्वत्र, अनभिस्नेहः, तत्, तत्, प्राप्य, शुभाशुभम् ।
न, अभिनन्दति, न, द्वेष्टि, तस्य, प्रज्ञा, प्रतिष्ठिता ।।
यदा, संहरते, च, अयम्, कूर्मः, अङ्गानि, इव, सर्वशः, ।
इन्द्रियाणि, इन्द्रियार्थेभ्यः, तस्य, प्रज्ञा, प्रतिष्ठिता ।।

समश्लोकी अनुवाद

जो शुभाशुभ को पाके न तो तुष्ट न रुष्ट है ।
सर्वत्र अनभिस्नेही, प्रज्ञा है उसकी स्थिरा ।।
कूर्म ज्यों निज अंगों को, इन्द्रियों को समेट ले ।
सर्वशः विषयों से जो, प्रज्ञा है उसकी स्थिरा ।।

सर्वत्र रागरहित होकर जो पुरुष शुभ या अशुभ की प्राप्ति में न हर्षित होता है न विषाद करता है, उसकी बुद्धि स्थिर है ।

कछुआ जैसे सब ओर से अंग समेट लेता है वैसे जब यह पुरुष इन्द्रियों को उनके विषय से समेट लेता है तब उसकी बुद्धि स्थिर हुई कही जाती है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३

भोग चिन्तन से क्या होता है ?

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते ।
सङ्गात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ।।
क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ।।२।६२-६३

पदच्छेद

ध्यायतः, विषयान्, पुंसः, संङ्गः, तेषु, उपजायते ।
सङ्गात्, संजायते, कामः, कामात्, क्रोधः, अभिजायते ।।
क्रोधात्, भवति, संमोहः, संमोहात्, स्मृतिविभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशात्, बुद्धिनाशः, बुद्धिनाशात्, प्रणश्यति ।।

समश्लोकी अनुवाद

भोग-चिन्तन होने से, होता उत्पन्न संग है ।
संग से काम होता है काम से क्रोध भारत ।।
क्रोध से मोह होता है, मोह से स्मृतिविभ्रम ।
उससे बुद्धि का नाश, बुद्धिनाश विनाश है ।।

विषयोंका चिन्तन करनेवाले पुरुषको उनमें आसक्ति उत्पन्न होती है, आसक्तिसे कामना होती है और कामनामें-से क्रोध उत्पन्न होता है ।

क्रोधसे मूढ़ता उत्पन्न होती है और मूढ़तासे स्मृति भ्रांत हो जाती है, स्मृति भ्रान्त होनेसे बुद्धिका नाश हो जाता है, और बुद्धिके नाशसे व्यक्ति ही नष्ट हो जाता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१४

मन के इन्द्रिय-भोगों के पीछे भटकने में क्या हानि है?

इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनु विधीयते।
तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि ॥२।६७

पदच्छेद

इन्द्रियाणाम्, हि, चरताम्, यत्, मनः, अनु, विधीयते।
तत्, अस्य, हरति, प्रज्ञाम्, वायुः, नावम्, इव अम्भसि ॥

समश्लोकी अनुवाद

मन जो दौड़ता पीछे इन्द्रियों के विहार में।
खींचता जन की प्रज्ञा जल में नाव वायु ज्यों ॥

विषयोंमें भटकनेवाली इन्द्रियोंके पीछे जिसका मन दौड़ता है, उसका मन उसकी बुद्धिको उसी प्रकार इधर-उधर खींच ले जाता है जैसे हवा नौकाको इधर-उधर खींच ले जाती है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५

कौन शान्ति प्राप्त करता है ?

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं
समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत् ।
तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति सर्वे
स शान्तिमाप्नोति न कामकामी ।।२।७०

पदच्छेद

आपूर्यमाणम्, अचलप्रतिष्ठम्,
समुद्रम्, आपः, प्रविशन्ति, यद्वत् ।
तद्वत्, कामाः, यम्, प्रविशन्ति, सर्वे,
सः, शान्तिम्, आप्नोति, न, कामकामी ॥

समश्लोकी अनुवाद

नदी नदों से भरता हुआ भी,
समुद्र है ज्यों स्थिर सुप्रतिष्ठ ।
त्यों काम सारे जिसमें समावें,
पाता वही शान्ति न काम-कामी ॥

नदियोंके प्रवेशसे भरता रहने पर भी समुद्र मर्यादासे कम-ज्यादा नहीं होता, उसी प्रकार सब प्रकारकी कामनाएँ जिस मनुष्यकी निर्विकारताको नहीं डिगा पाती वही शान्ति प्राप्त करता है न कि विषयोंमें आसक्ति रखने-वाला मनुष्य ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६

क्या मनुष्य कर्म किये बिना रह सकता है ?

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत् ।
कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ॥३।५

पदच्छेद

न, हि, कश्चित्, क्षणम्, अपि, जातु, तिष्ठति, अकर्मकृत् ।
कार्यते, हि, अवशः, कर्म, सर्वः, प्रकृतिजैः, गुणैः ॥

समश्लोकी अनुवाद

कर्म बिना नहीं कोई रहता क्षणमात्र भी ।
प्रकृति-गुणों से बँधे सभी हैं कर्म करते ॥

कोई भी मनुष्य कर्म किये बिना क्षणभर भी नहीं रह सकता । प्रत्येक व्यक्ति प्रकृतिसे उत्पन्न हुए गुणोंके कारण विवश होकर कर्म करता रहता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१७

कौन मिथ्याचारी है ?

कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन् ।
इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते ।।३।६

पदच्छेद

कर्मेन्द्रियाणि, संयम्य, यः, आस्ते, मनसा, स्मरन् ।
इन्द्रियार्थान्, विमूढात्मा, मिथ्याचारः, सः, उच्यते ॥

समश्लोकी अनुवाद

कर्मेन्द्रियों को रोकता करता भोग चिन्तन ।
वह मनुष्य मूढ़ है मिथ्याचारी कहा जाता ॥

जो मनुष्य कर्मेन्द्रियोंको रोकता है, परन्तु अपने मनमें इन्द्रियोंके विषयोंका स्मरण करता रहता है, ऐसा मूढ़ पुरुष मिथ्याचारी (पाखंडी) कहलाता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१८

सतत क्या करना चाहिये ?

तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर।
असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुषः ॥३।१९

पदच्छेद

तस्मात्, असक्तः, सततम्, कार्यम्, कर्म, समाचर, ।
असक्तः, हि, आचरन्, कर्म, परम्, आप्नोति, पूरुषः, ॥

समश्लोकी अनुवाद

अस्तु नित्य अनासक्त कर कर्तव्य-कर्म तू ।
निःसंग कर्म कर्ता ही परमात्मा को है पाता ॥

इसलिये तू आसक्ति छोड़कर निरन्तर कर्तव्य कर्म करता रह। अनासक्त कर्म करनेवाला परमात्माको प्राप्त करता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९

कर्म कैसे करना चाहिये ?

मयि सर्वाणि कर्माणि संन्यस्याध्यात्मचेतसा ।
निराशीर्निर्ममो भूत्वा युध्यस्व विगतज्वरः ।।३।३०

पदच्छेद

मयि, सर्वाणि, कर्माणि, संन्यस्य, अध्यात्मचेतसा, ।
निराशी:, निर्मम:, भूत्वा, युध्यस्व, विगतज्वरः ।।

समश्लोकी अनुवाद

रखके अध्यात्म-वृत्ति सब कर्म सौंप मुझे ।
त्याग आसक्ति ममता बिन संताप जूझ तू ।।

अध्यात्म-वृत्ति रखकर, सब कर्म मुझे अर्पण करके, आसक्ति और ममत्वको छोड़कर तू उद्वेग रहित रहकर—संताप रहित होकर, युद्ध (स्वकर्म) कर ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२०

मनुष्यका शत्रु कौन है ?

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः ।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम् ।।३।३७

पदच्छेद

कामः, एषः, क्रोधः, एषः, रजोगुणसमुद्भवः, ।
महाशनः, महापाप्मा, विद्धि, एनम्, इह, वैरिणम् ।।

समश्लोकी अनुवाद

रजोगुण से उपजा, काम है यह क्रोध है ।
महापेटू महापापी इसीको शत्रु जान तू ।।

रजोगुण से उत्पन्न होने वाले काम और क्रोध को ही इस लोकमें शत्रु समझो । काम और क्रोध आदि विकार बड़े पेटू (भोगोंसे न तृप्त होने वाले) और महापापी हैं ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२१

किसने मनुष्यके ज्ञानको ढाक रखा है ?

धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च ।
यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम् ।।
आवृतं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा ।
कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणानलेन च ।।३।३८-३९

पदच्छेद

धूमेन, आव्रियते, वह्निः, यथा, आदर्शः, मलेन, च ।
यथा, उल्बेन, आवृतः, गर्भः, तथा, तेन, इदम्, आवृतम् ।।
आवृतम्, ज्ञानम्, एतेन, ज्ञानिनः, नित्यवैरिणा ।
कामरूपेण, कौन्तेय, दुष्पूरेण, अनलेन, च ।।

समश्लोकी अनुवाद

धूएँ से ढकती अग्नि दर्पण ढका मैल से ।
ज्यों गर्भ ढका झिल्ली से इससे ज्ञान है ढका ।।
कभी तृप्त होता नहीं अग्नि तुल्य काम यह ।
ज्ञानियों का सदा वैरी ज्ञान को इसने ढका ।।

जैसे धूएंसे आग, मैलसे दर्पण तथा झिल्लीसे गर्भ ढका रहता है वैसे ही कामादिरूप शत्रुसे ज्ञान ढका रहता है ।

हे कौन्तेय ! तृप्त न किया जा सकनेवाला यह कामरूप अग्नि ज्ञानी पुरुषका नित्यका बैरी है । इससे ज्ञान ढका हुआ है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२२

कामादि विकारोंका निवास-स्थान कहाँ है ?

इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते ।
एतैर्विमोहयत्येष ज्ञानमावृत्य देहिनम् ।।३।४०

पदच्छेद

इन्द्रियाणि, मनः, बुद्धिः, अस्य, अधिष्ठानम्, उच्यते ।
एतैः, विमोहयति, एषः, ज्ञानम्, आवृत्य, देहिनम् ।।

समश्लोकी अनुवाद

निवास करता यह इन्द्रियाँ मन बुद्धि में ।
ढक ज्ञान इन द्वारा मोहता है मनुष्य को ।।

इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि इसके (कामके) निवास-स्थान हैं । इनके द्वारा ज्ञानको ढक कर यह कामरूप शत्रु मनुष्यको मोहित कर देता है—बेसुध कर देता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२३

काम आदि शत्रुओंको कैसे जीता जा सकता है ?

तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ ।
पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम् ।।
इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः ।
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः ।।
एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना ।
जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम् ।।
३।४१-४२-४३

पदच्छेद

तस्मात्, त्वम्, इन्द्रियाणि, आदौ, नियम्य, भरतर्षभ ।
पाप्मानम्, प्रजहि, हि, एनम्, ज्ञानविज्ञाननाशनम् ।।
इन्द्रियाणि, पराणि, आहुः, इन्द्रियेभ्यः, परम्, मनः ।
मनसः, तु, परा, बुद्धिः, यः, बुद्धेः, परतः, तु, सः ।।
एवम्, बुद्धेः, परम्, बुद्ध्वा, संस्तभ्य, आत्मानम्, आत्मना ।
जहि, शत्रुम्, महाबाहो, कामरुपम्, दुरासदम् ।।

समश्लोकी अनुवाद

अस्तु प्रथम हे ! पार्थ इन्द्रियों को निरोध के ।
ज्ञान-विज्ञान संहर्ता इस पापी को मार तू ।।
इन्द्रियाँ श्रेष्ठ हैं सारी इन्द्रियों से श्रेष्ठ मन ।
मन से श्रेष्ठ है बुद्धि आत्मा बुद्धि से श्रेष्ठ है ।।
जान आत्मा सर्वश्रेष्ठ आपको जीत आपसे ।
दुर्जय काम-शत्रु को मार तू हे महाबली ।।

हे अर्जुन ! इन्द्रियोंका संयम करके—इन्द्रियोंको नियंत्रण में करके, ज्ञान और विज्ञानका नाश करनेवाले इस पापीको अवश्य मार डाल ।

इन्द्रियाँ श्रेष्ठ हैं, उनसे सूक्ष्म और श्रेष्ठ मन है, मनसे श्रेष्ठ बुद्धि है । आत्मा बुद्धिसे भी अत्यन्त श्रेष्ठ है ।

इस प्रकार बुद्धि से भी अत्यन्त श्रेष्ठ आत्माको पहचान कर और आत्मा द्वारा मन और बुद्धि पर नियंत्रण करके, तू कामरूपी दुर्जय शत्रुका संहार कर ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२४

कौन पण्डित है ?

यस्य सर्वे समारम्भाः कामसंकल्पवर्जिताः ।
ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पण्डितं बुधाः ।।४।१९

पदच्छेद

यस्य, सर्वे, समारम्भाः, कामसंकल्पवर्जिताः ।
ज्ञानाग्निदग्धकर्माणम्, तम्, आहुः, पण्डितम्, बुधाः ।।

समश्लोकी अनुवाद

जो करता कर्म सब कामना संकल्प बिना ।
दग्धता ज्ञान से कर्म बुधों में पण्डित वही ।।

जिसके समस्त आरम्भ कामना और संकल्परहित होते हैं, जिसके कर्म ज्ञानरुपी अग्नि द्वारा भस्म हो गये हैं, ऐसेको ज्ञानी लोग पण्डित कहते हैं ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२५

कर्म करता हुआ कौन बँधता नहीं ?

यदृच्छालाभसंतुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सरः ।
समः सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबध्यते ।।४।२२

पदच्छेद

यदृच्छालाभसंतुष्टः, द्वन्द्वातीतः, विमत्सरः ।
समः, सिद्धौ, असिद्धौ, च, कृत्वा, अपि, न, निबध्यते ।।

समश्लोकी अनुवाद

सहज प्राप्तिसे तुष्ट द्वन्द्व ईर्ष्या रहित जो ।
सम सिद्धि-असिद्धि में कर्म कर भी न बँधे ।।

जो मनुष्य यथालाभसे संतुष्ट रहता है, जो सुख-दुःखादि द्वन्द्वोंसे मुक्त हो गया है, जो ईर्ष्यारहित है, जो सफलता-असफलतामें तटस्थ है, वह कर्म करते हुए भी उसके बन्धनमें नहीं पड़ता ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२६

किसे ज्ञान प्राप्त होता है ?

श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः ।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ।।४।३९

पदच्छेद

श्रद्धावान्, लभते, ज्ञानम्, तत्परः, संयतेन्द्रियः ।
ज्ञानम्, लब्ध्वा, पराम्, शान्तिम्, अचिरेण, अधिगच्छति ।।

समश्लोकी अनुवाद

श्रद्धालु तत्पर योगी प्राप्त करता ज्ञान को ।
ज्ञान से मिलती शीघ्र उसे परम शान्ति है ।।

श्रद्धावान, तत्पर, जितेन्द्रिय व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करता है । ज्ञान प्राप्त होने पर उसे तुरन्त परम शान्ति प्राप्त होती है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२७

किसे कहीं सुख नहीं है ?

अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति ।
नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः ।।४।४०

पदच्छेद

अज्ञः, च, अश्रद्दधानः, च, संशयात्मा, विनश्यति ।
न, अयम्, लोकः, अस्ति, न, परः, न, सुखम्, संशयात्मनः ।।

समश्लोकी अनुवाद

बिना ज्ञान बिना श्रद्धा, हो जाता नष्ट संशयी ।
न लोक न परलोक, उसे सुख कहीं नहीं ।।

जिसे न स्वयं ज्ञान है और न श्रद्धा है, उस संशयग्रस्त मनुष्यका नाश हो जाता है। संशयवानके लिए न तो यह लोक है न परलोक। उसे कहीं सुख नहीं है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२८

किसे संन्यासी समझना चाहिये ?

ज्ञेयः स नित्यसंन्यासी यो न द्वेष्टि न काङ्क्षति ।
निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो सुखं बन्धात्प्रमुच्यते ।।५।३

पदच्छेद

ज्ञेयः, सः, नित्यसंन्यासी, यः, न, द्वेष्टि, न, काङ्क्षति ।
निर्द्वन्द्वः, हि, महाबाहो, सुखम्, बन्धात्, प्रमुच्यते ।।

समश्लोकी अनुवाद

संन्यासी जानो उसको, जो इच्छा द्वेष मुक्त है ।
निर्द्वन्द्व प्राणी ही पार्थ, सुख से छोड़े बन्धन ।।

जो मनुष्य द्वेष नहीं करता और इच्छा नहीं करता, उसे नित्य संन्यासी जानना चाहिये । जो राग-द्वेषादि द्वन्द्वों से मुक्त है वह सहजमें बन्धनसे छूट ज़ाता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२९

कर्म करता हुआ कौन पापसे लिप्त नहीं होता ?

ब्रह्मण्याधाय कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा करोति यः ।
लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा ।।५।१०

पदच्छेद

ब्रह्मणि, आधाय, कर्माणि, सङ्गम्, त्यक्त्वा, करोति, यः ।
लिप्यते, न, सः, पापेन, पद्मपत्रम्, इव, अम्भसा ।।

समश्लोकी अनुवाद

कर्म ब्रह्मार्पण करे, आसक्ति को जो त्याग दे ।
पाप लिप्त होता नहीं, जल से पद्मपत्र ज्यों ।।

जो मनुष्य कर्मोंको ब्रह्मार्पण करके आसक्ति छोड़कर कर्म करता है, उसको वैसे ही पाप नहीं लगता, जैसे कि कमलके पत्तेको पानी नहीं लगता ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३०

कर्म करते हुए भी योगी कैसे शान्ति प्राप्त करता है ?

युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम् ।
अयुक्तः कामकारेण फले सक्तो निबध्यते ।।५।१२

पदच्छेद

युक्तः, कर्मफलम्, त्यक्त्वा, शान्तिम्, आप्नोति, नैष्ठिकीम् ।
अयुक्तः, कामकारेण, फले, सक्तः निबध्यते ।।

समश्लोकी अनुवाद

योगी त्याग फलाकांक्षा, पाता परम शान्ति है ।
कामना फल-प्राप्ति की, अयोगी को है बाँधती ।।

योगी कर्मफलको स्पृहाको त्यागकर दृढ़ शान्ति प्राप्त करता है, कर्म-फलकी आसक्ति बनी रहनेके कारण अयोगी बन्धनमें पड़ा रहता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३१

कौन समदर्शी है ?

विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि ।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः ।।५।१८

पदच्छेद

विद्याविनयसंपन्ने, ब्राह्मणे, गवि, हस्तिनि ।
शुनि, च, एव, श्वपाके, च, पण्डिताः, समदर्शिनः ।।

समश्लोकी अनुवाद

विज्ञ विनयी ब्राह्मण, गाय, हाथी, स्वान तथा ।
चाण्डाल इन सबमें पण्डित है समदर्शी ।।

पण्डित जन विद्या-विनय युक्त ब्राह्मण, गाय, हाथी, कुत्ता और चाण्डाल सभीके प्रति समदृष्टि रखते हैं ।

समदर्शी का सही अर्थ समझ लेना चाहिये । पण्डित समदृष्टि रखता है । सम-व्यवहार करना सम्भव नहीं है । पण्डित ब्राह्मण, गाय, हाथी, कुत्तेका समान हित-चिन्तक होता है । पंडित कड़ी गर्मी के दिनोंमें ब्राह्मण, गाय, हाथी, कुत्ता सबको धूपसे बचाने की इच्छा रखेगा और व्यवस्था करेगा । सबको पानी पिलानेका ख्याल करेगा । पर ब्राह्मण, गाय, हाथी और कुत्तेके लिए समान भाजन और समान आवास को व्यवस्था नहीं करेगा ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३२

बुद्धिमान किसमें नहीं फँसता ?

ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते ।
आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः ।।५।२२

पदच्छेद

ये, हि, संस्पर्शजाः, भोगाः, दुःखयोनयः, एव, ते ।
आद्यन्तवन्तः, कौन्तेय, न, तेषु, रमते, बुधः ।।

समश्लोकी अनुवाद

इन्द्रियों के भोग सब दुःखदायी अनित्य हैं ।
ये आदि-अन्त वाले हैं विवेकी रमते नहीं ।।

विषय-जनित भोग निश्चय ही दुःखका कारण होते हैं, वे आदि और अन्त वाले होते हैं । बुद्धिमान मनुष्य उनमें नहीं फँसता ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३३

कौन सुखी है ?

शक्नोतीहैव यः सोढुं प्राक्शरीरविमोक्षणात् ।
कामक्रोधोद्भवं वेगं स युक्तः स सुखी नरः ॥५।२३

पदच्छेद

शक्नोति, इह, एव, यः, सोढुम्, प्राक्, शरीरविमोक्षणात् ।
कामक्रोधोद्भवम्, वेगम्, सः, युक्तः, सः, सुखी, नरः ॥

समश्लोकी अनुवाद

तन त्याग के पूर्व ही सहने में समर्थ जो ।
काम का क्रोध का वेग वही योगी वही सुखी ॥

शरीर त्यागनेके पहले ही जो मनुष्य काम और क्रोधसे होनेवाले आवेगोंको सहन करनेमें समर्थ हो जाता है वही योगी है और वही सुखी है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३४

ब्रह्मनिर्वाण कौन पाता है ?

लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषाः ।
छिन्नद्वैधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः ।।५।२५

पदच्छेद

लभन्ते, ब्रह्मनिर्वाणम्, ऋषयः, क्षीणकल्मषाः ।
छिन्नद्वैधाः, यतात्मानः, सर्वभूतहिते, रताः ।।

समश्लोकी अनुवाद

ब्रह्मनिर्वाण पाते हैं शंकारहित निष्पापी ।
आत्मसंयमी ऋषि जो सर्व-हित में हैं लगे ।।

जिनके पाप नष्ट हो गए हैं, जिनकी शंकाएँ शान्त हो गई हैं, जिन्होंने मन पर अधिकार कर लिया है और जो प्राणिमात्रके हितमें लगे रहते हैं, वे ऋषि ब्रह्मनिर्वाण पाते हैं ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३५

संन्यासी व योगी के क्या लक्षण हैं ?

अनाश्रितः कर्मफलं कार्यं कर्म करोति यः ।
स संन्यासी च योगी च न निरग्निर्न चाक्रियः ।।६।१

पदच्छेद

अनाश्रितः, कर्मफलम्, कार्यम्, कर्म, करोति, यः ।
सः, संन्यासी, च, योगी, च, न, निरग्निः, न, च, अक्रियः ।।

समश्लोकी अनुवाद

छोड़ कर्मफलाकांक्षा कर्तव्य कर्म जो करे ।
वही संन्यासी व योगी न निरग्नि न निष्क्रिय ।।

कर्मफलका आश्रय लिए बिना जो मनुष्य कर्तव्य-कर्म करता है, वही संन्यासी है और वही योगी है। जो अग्निको अर्थात कर्तव्य कर्मोंको त्याग देता है और निठल्ला बैठ जाता है वह संन्यासी या योगी नहीं है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३६

मनुष्य योगारूढ़ कब कहा जाता है ?

यदा हि नेन्द्रियार्थेषु न कर्मस्वनुषज्जते ।
सर्वसंकल्पसंन्यासी योगारूढस्तदोच्यते ।।६।४

पदच्छेद

यदा, हि, न, इन्द्रियार्थेषु, न, कर्मसु, अनुषज्जते ।
सर्वसंकल्पसंन्यासी, योगारूढः, तदा, उच्यते ।।

समश्लोकी अनुवाद

कर्म में इन्द्रियार्थों में आसक्ति जब हो नहीं ।
सर्व संकल्प त्यागे जो कहाता योगारूढ़ है ।।

जब मनुष्य इन्द्रियोंके विषयोंमें या कर्ममें आसक्त नहीं होता और सब संकल्प त्याग देता है तब वह योगारूढ़ कहा जाता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३७

आत्मा का बन्धु और शत्रु कौन है ?

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् ।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ।।
बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः ।
अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत् ।।६।५-६

पदच्छेद

उद्धरेत्, आत्मना, आत्मानम्, न, आत्मानम्, अवसादयेत् ।
आत्मा, एव, हि, आत्मनः, बन्धुः, आत्मा, एव, रिपुः, आत्मनः ।।
बन्धुः, आत्मा, आत्मनः, तस्य, येन, आत्मा, एव, आत्मना, जितः ।
अनात्मनः, तु, शत्रुत्वे, वर्तेत, आत्मा, एव, शत्रुवत् ।।

समश्लोकी अनुवाद

आपको आप उद्धारे स्वयं को गिरने न दे।
आत्मा ही बन्धु आत्मा का आत्मा का रिपु भी वही ।।
स्वयं को जो जीत लेता वो अपना ही बन्धु है।
न आत्मनिग्रही है जो सो शत्रु है अपना ही ।।

आत्मासे मनुष्य आत्मका उद्धार करे, उसकी अधोगति न करे। आत्मा ही आत्माका बन्धु है और आत्मा ही आत्माका शत्रु है।

उसीका आत्मा बन्धु है जिसने आत्मबलसे मनको जोता है। जिसने मनको जोता नहीं वह अपने हो साथ शत्रुका सा बर्ताव करता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३८

योगाभ्यासी की दिनचर्या कैसी होनी चाहिये ?

नात्यश्नतस्तु योगोऽस्ति न चैकान्तमनश्नतः ।
न चाति स्वप्नशीलस्य जाग्रतो नैव चार्जुन ॥
युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु ।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ॥
६।१६-१७

पदच्छेद

न, अति, अश्नतः, तु, योगः, अस्ति, न, च, एकान्तम्, अनश्नतः ।
न, च, अति, स्वप्नशीलस्य, जाग्रतः, न, एव, च, अर्जुन ॥
युक्ताहारविहारस्य, युक्तचेष्टस्य, कर्मसु ।
युक्तस्वप्नावबोधस्य, योगः, भवति, दुःखहा ॥

समश्लोकी अनुवाद

न योग अति भोजी को न उसे जो निराहारी ।
जो अति जागता सोता पार्थ सिद्धि पाता नहीं ॥
खान-पान में संयमी संयत निद्रा-जागना ।
युक्त कार्यकर्ता का ही योग हो दुःखनाशक ॥

हे अर्जुन ! यह योग न तो बहुत खानेवालेका सिद्ध होता है और न बिल्कुल न खानेवालेका । बहुत सोने या बहुत जागनेवालेको भी यह प्राप्त नहीं होता ।

जो मनुष्य आहार-विहारमें, सोने-जागनेमें एवं अन्य कर्मोंमें परिमित रहता है, युक्त रहता है, उसका योग दुःख नाशक हो जाता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३९

योगी के चित्त की स्थिति कैसी रहती है ?

यथा दीपो निवातस्थो नेङ्गते सोपमां स्मृता ।
योगिनो यतचित्तस्य युञ्जतो योगमात्मनः ।।६।१९

पदच्छेद

यथा, दीपः, निवातस्थः, न, इङ्गते, सा, उपमा, स्मृता ।
योगिनः, यतचित्तस्य, युञ्जतः, योगम्, आत्मनः ।।

समश्लोकी अनुवाद

निर्वात स्थान में दीप जलता ज्यों अविचल ।
वही उपमा दी गयी योगी के युक्त चित्त की ।।

जिस प्रकार वायु रहित स्थानमें रखे हुए दीपक की लौ नहीं हिलती, वैसी ही स्थिति आत्म-चिन्तनमें लगे योगीके निरुद्ध हुए चित्तकी कही गयी है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४०

समदर्शी योगी कैसे देखता है ?

सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि ।
ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः ॥६।२९

पदच्छेद

सर्वभूतस्थम्, आत्मानम्, सर्वभूतानि, च, आत्मनि ।
ईक्षते, योगयुक्तात्मा, सर्वत्र, समदर्शनः ॥

समश्लोकी अनुवाद

सर्वभूत को आत्मा में आत्मा को सर्वभूत में ।
योग युक्त सर्वत्र ही करता आत्म दर्शन ॥

सर्वत्र समभाव रखनेवाला योगी अपने को सब प्राणियोंमें और सब प्राणियोंको अपनेंमें देखता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४१

ईश्वर का सतत दर्शन कौन करता है ?

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति ।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति ।।६।३०

पदच्छेद

यः माम्, पश्यति, सर्वत्र, सर्वम्, च, मयि, पश्यति ।
तस्य, अहम्, न प्रणश्यामि, सः, च, मे, न, प्रणश्यति ।।

समश्लोकी अनुवाद

जो मुझे सबमें देखे सबको देखे मुझमें ।
मैं दूर उससे नहीं न दूर वह मुझसे ।।

जो मुझे सर्वत्र देखता है और सबको मुझमें देखता है, उससे मैं कभी दूर नहीं होता और न वह ही कभी मुझसे दूर होता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४२

श्रेष्ठ योगी कौन है ?

आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन ।
सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः ॥६।३२

पदच्छेद

आत्मौपम्येन, सर्वत्र, समम्, पश्यति, यः, अर्जुन ।
सुखम्, वा, यदि, वा, दुःखम्, सः, योगी, परमः, मतः ॥

समश्लोकी अनुवाद

सबका सुख-दुःख जो देखे अपने समान ।
सर्वत्र समबुद्धि हो वह योगी श्रेष्ठ अति ॥

हे अर्जुन ! जो मनुष्य दूसरोंके सुखःदुखको अपने सुखःदुःखके समान समझता है और सर्वत्र समभाव रखता है वह योगी श्रेष्ठ है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४३

मन कैसे वश में किया जा सकता है ?

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम् ।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते ।।६।३५

पदच्छेद

असंशयम्, महाबाहो, मनः, दुर्निग्रहम्, चलम् ।
अभ्यासेन, तु, कौन्तेय, वैराग्येण, च, गृह्यते ।।

समश्लोकी अनुवाद

है अवश्य महाबाहो मन दुस्साध्य चंचल ।
वश में हो सकता है अभ्यास से वैराग्य से ।।

हे महाबाहो ! इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि मन चंचल है और उसका निग्रह करना कठिन है। पर अभ्यास और वैराग्यसे उसे वशमें किया जा सकता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४४

कल्याण मार्ग के पथिक को क्या आश्वासन प्राप्त है ?

पार्थ नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते ।
न हि कल्याणकृत्कश्चिद्दुर्गतिं तात गच्छति ।।६।४०

पदच्छेद

पार्थ, न, एव, इह, न, अमुत्र, विनाशः, तस्य, विद्यते ।
न, हि, कल्याणकृत्, कश्चित्, दुर्गतिम्, तात, गच्छति ।।

समश्लोकी अनुवाद

वह नष्ट होता नहीं लोक में परलोक में ।
दुर्गति सदाचारी की पार्थ कभी होती नहीं ।।

हे पार्थ ! ऐसे मनुष्योंका नाश न तो इस लोकमें होता है न परलोक में । हे तात ! कल्याणकारी कर्म करनेवाला कोई भी मनुष्य दुर्गतिको नहीं प्राप्त होता ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४५

प्रयत्नशील सदाचारी का क्या भविष्य है ?

प्रयत्नाद्यतमानस्तु योगी संशुद्धकिल्बिषः ।
अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम् ।।६।४५

पदच्छेद

प्रयत्नात्, यतमानः, तु, योगी, संशुद्धकिल्बिषः ।
अनेकजन्मसंसिद्धः, ततः, याति, पराम्, गतिम् ।।

समश्लोकी अनुवाद

जन्म-जन्म के यत्न से सर्व-पाप से शुद्ध हो ।
प्रयत्न तत्पर योगी पाता है परम गति ।।

लगनसे प्रयत्न करता हुआ योगी अनेक जन्मोंमें अपने-आपको शुद्ध बनाता हुआ सब पापोंसे छूटकर परमगतिको पाता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४६

ईश्वर से परे क्या है ?

मत्तः परतरं नान्यत्किंचिदस्ति धनंजय ।
मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव ।।७।७

पदच्छेद

मत्तः, परतरम्, न, अन्यत्, किंचित्, अस्ति, धनंजय ।
मयि, सर्वम्, इदम्, प्रोतम्, सूत्रे, मणिगणाः, इव ।।

समश्लोकी अनुवाद

मुझसे परे कौन्तेय कहीं भी कुछ है नहीं ।
विश्व गुंथा है मुझमें मणियाँ जैसे सूत्र में ।।

हे अर्जुन ! मुझसे परे कुछ भी नहीं है। धागेमें पिरोयी मणियोंके समान विश्व मुझमें गुंथा हुआ है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४७

माया को कौन तर जाते हैं ?

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया ।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ।।७।१४

पदच्छेद

दैवी, हि, एषा, गुणमयी, मम, माया, दुरत्यया ।
माम्, एव, ये, प्रपद्यन्ते, मायाम्, एताम्, तरन्ति, ते ।।

समश्लोकी अनुवाद

मेरी त्रिगुणी माया को पार पाना दुष्कर है ।
मेरी शरण जो आते माया को तरते वही ।।

मेरी तीन गुणों वाली मायाका तरना कठिन है; पर जो मेरी ही शरण लेते हैं वे इस मायाको तर जाते हैं ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४८

कौन मनुष्य ईश्वर की शरण नहीं लेते ?

न मां दुष्कृतिनो मूढाः प्रपद्यन्ते नराधमाः ।
माययापहृतज्ञाना आसुरं भावमाश्रिताः ॥७।१५

पदच्छेद

न, माम्, दुष्कृतिनः, मूढाः, प्रपद्यन्ते, नराधमाः ।
मायया, अपहृतज्ञानाः, आसुरम्, भावम्, आश्रिताः ॥

समश्लोकी अनुवाद

माया से विमूढ़ हुए हैं आसुरी स्वभाव के ।
वे दुष्कृत नराधम न आते शरण मेरी ॥

माया द्वारा जिनका ज्ञान नष्ट हो गया है वे अविवेकी, अधम, आसुरी स्वभावके मनुष्य ईश्वरकी शरण नहीं आते ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४९

कौन महात्मा दुर्लभ है ?

बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते ।
वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः ॥७।१९

पदच्छेद

वहूनाम्, जन्मनाम्, अन्ते, ज्ञानवान्, माम्, प्रपद्यते ।
वासुदेवः, सर्वम्, इति, सः, महात्मा, सुदुर्लभः ॥

समश्लोकी अनुवाद

बहु जन्मों के अन्त में ज्ञानी पाता है मुझको ।
विश्व वासुदेव-मय दुर्लभ ऐसा ज्ञाता है ॥

अनेक जन्मोंके बाद ऐसी दृढ़ प्रतीति होने पर कि सब कुछ वासुदेव मय ही है, ज्ञानी पुरुष मुझे प्राप्त कर लेता है। ऐसा महात्मा दुर्लभ है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५०

निरन्तर क्या करना चाहिये ?

तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च ।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयम् ।।८।७

पदच्छेद

तस्मात्, सर्वेषु, कालेषु, माम्, अनुस्मर, युध्य, च ।
मयि, अर्पितमनोबुद्धिः, माम्, एव, एष्यसि, असंशयम् ।।

समश्लोकी अनुवाद

अतएव सर्वकाल मुझे सुमिर जूझ तू ।
मुझे अर्प मन-बुद्धि मुझे निश्चय पावेगा ।।

इसलिए सदा मुझे स्मरण कर और जूझता रह (स्वकर्ममें लगा रह) । इस प्रकार मुझमें मन और बुद्धि को एकाग्र रखने से तू अवश्य मुझे पावेगा ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५१

ईश्वर प्राप्ति किसे सुलभ है ?

अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः ।
तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः ।।८।१४

पदच्छेद

अनन्यचेताः, सततम्, यः, माम्, स्मरति, नित्यशः ।
तस्य, अहम, सुलभः, पार्थ, नित्ययुक्तस्य, योगिनः ।।

समश्लोकी अनुवाद

अनन्य-चित्त सतत मुझे ही स्मरण करे ।
मैं सुलभ हूँ अर्जुन उस एकाग्र योगी को ।।

हे अर्जुन ! चित्तको अन्यत्र कहीं न रखकर जो नित्य और निरन्तर मेरा ही स्मरण करता है उसे मेरी प्राप्ति सुलभ है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५२

परम पुरुष परमात्मा कैसे प्राप्त होता है ?

पुरुषः स परः पार्थ भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया ।
यस्यान्तःस्थानि भूतानि येन सर्वमिदं ततम् ।।८।२२

पदच्छेद

पुरुषः, सः, परः, पार्थ, भक्त्या, लभ्यः, तु, अनन्यया ।
यस्य, अन्तःस्थानि, भूतानि, येन, सर्वम्, इदम्, ततम् ।।

समश्लोकी अनुवाद

जिसमें सब प्राणी हैं जो जगत में व्याप्त है ।
सो परमात्मा मिलता पार्थ अनन्य भक्ति से ।।

हे पार्थ ! वह परमात्मा जिसमें सब भूत निवास करते हैं और जिससे यह सारा संसार व्याप्त है उसे अनन्य भक्ति द्वारा प्राप्त किया जा सकता है । अनन्य भक्तिसे ही उसका दर्शन मिलता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५३

ईश्वर किसका योग-क्षेम वहन करता है ?

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ।।९।२२

पदच्छेद

अनन्याः, चिन्तयन्तः, माम्, ये, जनाः, पर्युपासते ।
तेषाम्, नित्याभियुक्तानाम्, योगक्षेमम्, वहामि, अहम् ।।

समश्लोकी अनुवाद

जो एकाग्र भजते हैं मुझे नित्य निरन्तर ।
उन अनन्य भक्तोंका योगक्षेम उठाता मैं ।।

जो लोग अनन्य भावसे मेरा चिन्तन करते हुए मुझे भजते हैं, उन नित्य मुझमें ही रत रहनेवालोंका योग-क्षेम मैं उठाता हूँ ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५४

ईश्वर किन वस्तुओं की भेंट स्वीकार करता है ?

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति ।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः ।।९.२६

पदच्छेद

पत्रम्, पुष्पम्, फलम्, तोयम्, यः, मे, भक्त्या, प्रयच्छति ।
तत्, अहम्, भक्त्युपहृतम्, अश्नामि, प्रयतात्मनः ।।

समश्लोकी अनुवाद

फल फूल पत्र जल अर्पित करे भक्ति से ।
स्वीकार करता हूँ मैं श्रद्धा से लघु वस्तु भी ।।

पत्र, फूल, फल या जल भी यदि मुझे भक्तिसे अर्पित किया जाता है तो श्रद्धा-भक्ति पूर्वक दी उस वस्तुको मैं स्वीकार करता हूँ ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५५

मनुष्य ईश्वर को कौन कर्म अर्पण कर दे ?

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत् ।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम् ।।९।२७

पदच्छेद

यत्, करोषि, यत्, अश्नासि, यत्, जुहोषि, ददासि, यत् ।
यत्, तपस्यसि, कौन्तेय, तत्, कुरुष्व, मदर्पणम् ।।

समश्लोकी अनुवाद

तू जो करता जो खाता हवन करे या दान ।
पार्थ तू जो तप करे कर दे मुझे अर्पण ।।

हे अर्जुन ! तू जो करता है, जो खाता है, जो होम-हवन करता है, जो दान देता है, जो तप करता है वह सब मुझे अर्पण कर ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५६

किस वर्ण लिंग और जाति का मनुष्य परमगति प्राप्त कर सकता है ?

मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः ।
स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम् ।।९।३२

पदच्छेद

माम्, हि, पार्थ, व्यपाश्रित्य, ये, अपि, स्युः, पापयोनयः ।
स्त्रियः, वैश्याः, तथा, शूद्राः, ते, अपि, यान्ति, पराम्, गतिम् ।।

समश्लोकी अनुवाद

पार्थ स्त्री वैश्य व शूद्र या कोई पाप-योनि भी ।
मेरी शरण जो आते परमगति पा जाते ।।

हे अर्जुन ! स्त्री, वैश्य, शूद्र या कोई पापयोनिवाला भी मेरी शरण में आने पर परमगति पा जाता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५७

प्राणिमात्र का आदि, मध्य और अन्त कौन है ?

अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः ।
अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च ।।१०।२०

पदच्छेद

अहम्, आत्मा, गुडाकेश, सर्वभूताशयस्थितः ।
अहम्, आदिः, च, मध्यम्, च, भूतानाम्, अन्तः, एव, च ।।

समश्लोकी अनुवाद

अर्जुन मैं ही आत्मा हूँ हृदय स्थित भूतों का ।
मैं आदि हूँ मैं मध्य हूँ मैं ही अन्त प्राणियों का ।।

हे अर्जुन ! मैं सब प्राणियों के हृदयमें स्थित आत्मा हूँ । सब प्राणियोंका आदि मध्य और अन्त भी मैं ही हूँ ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५८

ईश्वर की आराधना कैसे करनी चाहिये ?

त्वमादिदेवः पुरुषः पुराण-
स्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम् ।
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम
त्वया ततं विश्वमनन्तरूप ।।
वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशांकः
प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च ।
नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः
पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते ।।
नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते
नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व ।
अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं
सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः ।।

११।३८-३९-४०

पदच्छेद

त्वम्, आदिदेवः, पुरुषः, पुराणः
त्वम्, अस्य, विश्वस्य, परम्, निधानम् ।
वेत्ता, असि, वेद्यम्, च, परम्, च, धाम,
त्वया, ततम्, विश्वम्, अनन्तरूप ।।
वायुः, यमः, अग्निः, वरुणः, शशांकः
प्रजापतिः, त्वम्, प्रपितामहः, च ।
नमः, नमः, ते, अस्तु, सहस्रकृत्वः
पुनः, च, भूयः, अपि, नमः, नमः, ते ।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नमः, पुरस्तात्, अथ. पृष्ठतः, ते
नमः, अस्तु, ते, सर्वतः, एव, सर्व ।
अनन्तवीर्य, अमितविक्रमः, त्वम्
सर्वम्, समाप्नोषि, ततः, असि, सर्वः ॥

समश्लोकी अनुवाद

हे आदि-देव पुरुष पुराण
प्रभो, तुम्हीं आश्रय विश्व के हो ।
ज्ञाता व ज्ञेय तुम्हीं मोक्ष-धाम
अनन्त रूपों में व्याप्त तुम्हीं हो ॥
तुम्हीं हो वायु वरुण शशांक
अग्नि, यम, पिता, प्रपितामह ।
तुम्हें नमस्कार सहस्रवार
पुनः नमस्ते नमस्ते नमस्ते ॥
आगे व पीछे सब ओर से ही
हे ईश तुम्हें करूँ नमस्कार ।
शक्ति पराक्रम तुम्हें अनन्त
सबमें हो सर्वरूप तुम्हीं हो ॥

हे प्रभो, आप आदिदेव हैं। आप पुराण पुरुष हैं। आप इस विश्वके आश्रय स्थान हैं। आप जाननेवाले हैं और जानने योग्य हैं। आपही मोक्ष-धाम हैं। हे अनन्तरूप आपने ही सारे विश्वको व्याप्त किया है।

वायु, यम, अग्नि, वरुण, चन्द्र, प्रजापति, प्रपितामह भी आप ही हैं। आपको हजारों बार नमस्कार है। आपको पुनः पुनः नमस्कार करता हूँ।

हे ईश ! आपको आगे, पीछे सब ओरसे नमस्कार है। आपकी शक्ति अपार है। आपका पराक्रम अनन्त है। आप संसारको व्याप्त किए हुए हैं आप ही सर्वरूप हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५९

किन गुणों से प्रभु-प्राप्ति होती है ?

मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः सङ्गवर्जितः ।
निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव ।।११।५५

पदच्छेद

मत्कर्मकृत्, मत्परमः, मद्भक्तः, सङ्गवर्जितः ।
निर्वैरः, सर्वभूतेषु, यः, सः, माम्, एति, पाण्डव ।।

समश्लोकी अनुवाद

मत्पर, भक्त, निःसंग कर्म करे मेरे लिए ।
प्राणिमात्र से निर्वैर वही पार्थ पाता मुझे ।।

हे पाण्डव ! जो मनुष्य मेरे लिए कर्म करता है, मुझमें परायण रहता है, मेरा भक्त है, आसक्ति का त्याग करता है और जो सब प्राणियोंके प्रति निर्वैर (वैरसे रहित) है, वह मुझे पाता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६०

निराकार की उपासना कठिन क्यों है ?

क्लेशोऽधिकतरस्तेषामव्यक्तासक्तचेतसाम् ।
अव्यक्ता हि गतिर्दुःखं देहवद्भिरवाप्यते ।।१२।५

पदच्छेद

क्लेशः, अधिकतरः, तेषाम्, अव्यक्तासक्तचेतसाम् ।
अव्यक्ता, हि, गतिः, दुःखम्, देहवद्भिः, अवाप्यते ।।

समश्लोकी अनुवाद

अव्यक्त ध्यान जो करे उसे क्लेश विशेष है ।
अव्यक्त गति का पाना कष्टसाध्य सदेह को ।।

अव्यक्त ब्रह्मकी उपासनामें जिसने अपने चित्तको लगाया हुआ है उसे कष्ट अधिक है । देहधारी मनुष्यके लिए अव्यक्त ब्रह्मका ध्यान कठिन है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६१

ईश्वर संसार-सागर से किसको शीघ्र पार उतारता है ?

ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि संन्यस्य मत्पराः
अनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपासते ।।
तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात् ।
भवामि नचिरात्पार्थ मय्यावेशितचेतसाम् ।।१२।६-७

पदच्छेद

ये, तु, सर्वाणि, कर्माणि, मयि, संन्यस्य, मत्पराः ।
अनन्येन, एव, योगेन, माम्. ध्यायन्तः, उपासते ।।
तेषाम्, अहम्, समुद्धर्ता, मृत्युसंसारसागरात् ।
भवामि, नचिरात्, पार्थ, मयि, आवेशितचेतसाम् ।।

समश्लोकी अनुवाद

पार्थ जो अर्पण करे समस्त कर्मों को मुझे ।
अनन्य भक्ति से मेरा भजन चिन्तन करे ।।
उन भक्तों को जो सदा पिरोते चित्त मेरे में ।
मैं शीघ्र ही पार करूँ मृत्यु-संसार-सिन्धु से ।।

हे पार्थ ! जो मुझमें परायण रहकर, सब कर्म मुझे समर्पण करके अनन्य भक्तिसे मेरा ध्यान करते हुए मेरी उपासना करते हैं और मुझमें जिनका चित्त पिरोया हुआ है उन्हें मृत्युरूपी संसार-सागरसे मैं शीघ्र ही पार उतार देता हूँ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६२

कैसा भक्त भगवान को प्रिय है ?

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च ।
निर्ममो निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी ।।
संतुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः ।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः ।।
यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः ।
हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः ।।
अनपेक्षः शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथः ।
सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्तः स मे प्रियः ।।
यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति ।
शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः ।।
समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः ।
शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः ।।
तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी संतुष्टो येन केनचित् ।
अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नरः ।।
ये तु धर्म्यामृतमिदं यथोक्तं पर्युपासते ।
श्रद्धधाना मत्परमा भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः ।।

१२।१३से२०

पदच्छेद

अद्वेष्टा, सर्वभूतानाम्, मैत्रः, करुणः, एव, च ।
निर्ममः, निरहंकारः, समदुःखसुखः, क्षमी ।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संतुष्टः, सततम्, योगी, यतात्मा, दृढनिश्चयः ।
मयि, अर्पितमनोबुद्धिः, यः, मद्भक्तः, सः, मे, प्रियः ॥
यस्मात्, न, उद्विजते, लोकः, लोकात्, न, उद्विजते, च, यः ।
हर्षामर्षभयोद्वेगैः, मुक्तः, यः, सः, च, मे, प्रियः ॥
अनपेक्षः, शुचिः, दक्षः, उदासीनः, गतव्यथः ।
सर्वारम्भपरित्यागी, यः, मद्भक्तः, सः, मे, प्रियः ॥
यः, न, हृष्यति, न, द्वेष्टि, न, शोचति, न काङ्क्षति ।
शुभाशुभपरित्यागी, भक्तिमान्, यः, सः, मे, प्रियः ॥
समः, शत्रौ, च, मित्रे, च, तथा, मानापमानयोः ।
शीतोष्णसुखदुःखेषु, समः, सङ्गविवर्जितः ॥
तुल्यनिन्दास्तुतिः, मौनी, संतुष्टः, येन, केनचित् ।
अनिकेतः, स्थिरमतिः, भक्तिमान्, मे, प्रियः, नरः ॥
ये, तु, धर्म्यामृतम्, इदम्, यथा, उक्तम्, पर्युपासते ।
श्रद्दधानाः, मत्परमाः, भक्ताः, ते, अतीव, मे, प्रियाः ॥

समश्लोकी अनुवाद

सर्वभूतों से अद्वेष मित्रता करुणा क्षमा ।
दुःख सुख में समता निरहंकारी निर्मम ॥
सदा संतुष्ट जो योगी संयमी दृढ़-निश्चयी ।
अर्पे मन-बुद्धि मुझे वह भक्त मुझे प्रिय ॥
लोक से उद्विग्न न हो न करे उद्विग्न उसे ।
उद्वेगों से रहित जो वह है मुझको प्रिय ॥
शुचि दक्ष उदासीन आकांक्षा व्यथा न जिसे ।
सर्वारम्भ को तजता वह भक्त मुझे प्रिय ॥
हर्ष द्वेष नहीं जिसे नहीं शोक न कामना ।
शुभ-अशुभ को त्यागे वह भक्त मुझे प्रिय ॥
समता शत्रु-मित्र में सम मान-अपमान ।
शीतोष्ण सुख-दुख में समता अनासक्तता ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो यथा-प्राप्त सन्तुष्ट मौनी तुल्य निन्दा-स्तुति ।
अनिकेत स्थिर-बुद्धि वह भक्त मुझे प्रिय ।।
जो भक्त श्रद्धा सहित करता है आचरण ।
उक्त अमृत-धर्म का अति प्रिय वह मुझे ।।

जो प्राणिमात्रके प्रति द्वेषरहित, सबका मित्र, दयावान, ममतारहित, सुख-दुःखमें समान, क्षमावान, सदा सन्तोषी, योगयुक्त, इन्द्रिय-निग्रही और दृढ़ निश्चयी है तथा मुझमें जिसने अपनी बुद्धि और मन अर्पण कर दिया है, ऐसा मेरा भक्त मुझे प्रिय है।

जिससे लोग उद्वेग नहीं पाते, जो लोगोंसे उद्वेग नहीं पाता, जो हर्ष क्रोध, ईर्ष्या, भय, उद्वेगसे मुक्त है, वह मुझे प्रिय है।

जो इच्छा रहित है, पवित्र है, दक्ष है, तटस्थ है, व्यथारहित है। संकल्पमात्रका जिसने त्याग किया है, वह मेरा भक्त मुझे प्रिय है।

जिसे हर्ष नहीं होता, जो द्वेष नहीं करता, जो चिन्ता नहीं करता, कामना रहित है और शुभाशुभ का त्याग करनेवाला है, वह भक्तिपरायण मुझे प्रिय हैं।

शत्रु-मित्र, मान-अपमान, शीत-उष्ण, सुख-दुःख इन सबमें जो समतावान है। जिसने आसक्ति छोड़ दी है, जो निन्दा और स्तुतिमें समान भावसे बर्तता है और मौन धारण करता है, जो मिल जाय उससे जिसे सन्तोष है, जो अनिकेत है, जो स्थिर चित्तवाला है, ऐसा भक्त मुझे प्रिय है।

ऊपर बतलाये हुए इस अमृततुल्य धर्मका जो मत्परायण होकर श्रद्धासे आचरण करते हैं वे भक्त मुझे अत्यन्त प्रिय हैं।

रामचरितमानससे तुलना कीजिये—

काम कोह मद मान न मोहा। लोभ न छोभ न राग न द्रोहा ।।
जिन्ह के कपट दंभ नहिं माया। तिन्हके हृदय बसहु रघुराया ।।
सबके प्रिय सब के हितकारी। दुःख सुख सरिस प्रसंसा गारी ।।
कहहिं सत्य प्रिय बचन बिचारी। जागत सोवत सरन तुम्हारी ।।
तुम्हहि छाड़ि गति दूसरि नाहीं। राम बसहु तिन्ह के मन माहीं ।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जननी सम जानहिं परनारी। धनु पराव बिष ते बिषभारी ॥
जे हरषहिं पर संपति देखी। दुखित होहिं पर बिपति बिसेषी ॥
जिन्हहि राम तुम्ह प्रानपियारे। तिन्ह के मन सुभ सदन तुम्हारे ॥

स्वामि सखा पितु मातु गुर जिन्ह के सब तुम्ह तात।
मन मन्दिर तिन्ह के बसहु सीय सहित दोउ भ्रात ॥

अवगुन तजि सबके गुन गहहीं। बिप्र धेनु हित संकट सहहीं ॥
नीति निपुन जिन्ह कइ जग लीका। घर तुम्हार तिन्ह कर मनु नीका ॥
गुन तुम्हार समुझइ निज दोसा। जेहि सब भाँति तुम्हार भरोसा ॥
राम भगत प्रिय लागहिं जेही। तेहि उर बसहु सहित बैदेही ॥
जाति पाँति धनु धरमु बड़ाई। प्रिय परिवार सदन सुखदायी ॥
सब तजि तुम्हहि रहइ उर लाई। तेहि के हृदयँ रहहु रघुराई ॥
सरगु नरकु अपबरगु समाना। जहँ तहँ देख धरें धनुबाना ॥
करम बचन मन राउर चेरा। राम करहु तेहि कें उर डेरा ॥

जाहि न चाहिअ कबहुँ कछु तुम्ह सन सहज सनेहु।
बसहु निरंतर तासु मन सो राउर निज गेहु ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६३

ज्ञान किसे कहते हैं ?

अमानित्वमदम्भित्वमहिंसा क्षान्तिरार्जवम् ।
आचार्योपासनं शौचं स्थैर्यमात्मविनिग्रहः ॥
इन्द्रियार्थेषु वैराग्यमनहंकार एव च ।
जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम् ॥
असक्तिरनभिष्वङ्गः पुत्रदारगृहादिषु ।
नित्यं च समचित्तत्वमिष्टानिष्टोपपत्तिषु ॥
मयि चानन्ययोगेन भक्तिरव्यभिचारिणी ।
विविक्तदेशसेवित्वमरतिर्जनसंसदि ॥
अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम् ।
एतज्ज्ञानमिति प्रोक्तमज्ञानं यदतोऽन्यथा ॥

१३।७-८-९-१०-११

पदच्छेद

अमानित्वम्, अदम्भित्वम्, अहिंसा, क्षान्तिः, आर्जवम् ।
आचार्योपासनम्, शौचम्, स्थैर्यम्, आत्मविनिग्रहः ॥
इन्द्रियार्थेषु, वैराग्यम्, अनहंकारः, एव, च ।
जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम् ॥
असक्तिः, अनभिष्वङ्गः, पुत्रदारगृहादिषु ।
नित्यम्, च, समचित्तत्वम्, इष्टानिष्टोपपत्तिषु ॥
मयि, च, अनन्ययोगेन, भक्तिः, अव्यभिचारिणी ।
विविक्तदेशसेवित्वम्, अरतिः, जनसंसदि ॥
अध्यात्मज्ञाननित्यत्वम्, तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम् ।
एतत्, ज्ञानम्, इति, प्रोक्तम्, अज्ञानम्, यत, अतः, अन्यथा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समश्लोकी अनुवाद

नम्रता दंभ-हीनता शुचिता अहिंसा क्षमा ।
आचार्य-सेवा मृदुता स्थिरता आत्म-निग्रह ।।
वैराग्य सभी भोगों से अभाव अहंकार का ।
जन्म मृत्यु जरा व्याधि दु:ख दोषों का विचार ।।
स्त्री पुत्र गृह आदि में आसक्ति ममता नहीं ।
चित्त में समता सदा प्रिय मिले या अप्रिय ।।
अनन्य भक्ति मुझमें एकनिष्ठ अविचल ।
एकान्त वास की इच्छा अरुचि भीड़-भाड़ से ।।
अध्यात्म ज्ञान तल्लीन प्रकाश तत्त्वज्ञान का ।
यह सब तो ज्ञान है विपरीत है अज्ञान ।।

नम्रता, दंभहीनता, अहिंसा, क्षमा, सरलता, आचार्यकी सेवा, शुद्धता, स्थिरता, आत्मसंयम, इन्द्रियोंके विषयोंमें वैराग्य, अहंकार-रहितता, जन्म, मरण, जरा, व्याधि, दुःख और दोषोंका निरन्तर भान, पुत्र, स्त्री और गृह आदिमें मोह तथा ममताका अभाव, प्रिय और अप्रियमें नित्य समभाव, मुझमें अनन्य ध्यानपूर्वक एकनिष्ठ भक्ति, एकान्त स्थानमें निवास करना और जनसमुदायमें सम्मिलित होनेकी अरुचि, आध्यात्मिक ज्ञानमें नित्यस्थिति और आत्मदर्शन—यह सब ज्ञान कहा गया है। जो इससे विपरीत है वह अज्ञान है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६४

ईश्वर का स्वरूप कैसा है ?

सर्वतःपाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् ।
सर्वतःश्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ।।
सर्वेन्द्रियगुणाभासं सर्वेन्द्रियविवर्जितम् ।
असक्तं सर्वभृच्चैव निर्गुणं गुणभोक्तृ च ।।
बहिरन्तश्च भूतानामचरं चरमेव च ।
सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयं दूरस्थं चान्तिके च तत् ।।
अविभक्तं च भूतेषु विभक्तमिव च स्थितम् ।
भूतभर्तृ च तज्ज्ञेयं ग्रसिष्णु प्रभविष्णु च ।।
ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते ।
ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य विष्ठितम् ।।

१३।१३-१४-१५-१६-१७

पदच्छेद

सर्वतःपाणिपादम्, तत् सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् ।
सर्वतःश्रुतिमत्, लोके, सर्वम्, आवृत्य, तिष्ठति ।।
सर्वेन्द्रियगुणाभासम् सर्वेन्द्रियविवर्जितम् ।
असक्तम्, सर्वभृत्, च, एव, निर्गुणम् गुणभोक्तृ, च ।।
बहिः, अन्तः, च, भूतानाम्, अचरम्, चरम्, एव, च ।
सूक्ष्मत्वात्, तत्, अविज्ञेयम्, दूरस्थम्, च, अन्तिके, च, तत् ।।
अविभक्तम्, च, भूतेषु, विभक्तम्, इव, च, स्थितम् ।
भूतभर्तृ, च, तत्, ज्ञेयम, ग्रसिष्णु, प्रभविष्णु, च ।।
ज्योतिषाम्, अपि, तत्, ज्योतिः, तमसः, परम्, उच्यते ।
ज्ञानम्, ज्ञेयम्, ज्ञानगम्यम्, हृदि, सर्वस्य, विष्ठितम् ।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समश्लोकी अनुवाद

सभी ओर हैं उसके हाथ पैर आँख कान ।
मुख भी सभी तरफ वह सर्वत्र व्याप्त है ।।
सर्वेन्द्रिय गुणाभासी सर्वेन्द्रियाँ रहित जो ।
निर्गुणी गुण भोक्ता है पोषक है अनासक्त ।।
अन्दर है बाहर भी गतिमान है स्थिर भी ।
सूक्ष्म है अविज्ञेय है वह पास है दूर भी ।।
है अविभक्त दीखता प्राणियों में विभक्त सा ।
ज्ञेय ब्रह्म ही जीवों का पालक नाशक कर्ता ।।
ज्योतियों की ज्योति वह तम से है अति परे ।
ज्ञान, ज्ञेय, ज्ञान-गम्य सबके उर में बसा ।।

ईश्वरके हाथ और पैर सब जगह हैं, उसकी आँखे और मुँह सब ओर हैं। उसके कान सब दिशाओंमें हैं। सर्वत्र व्याप्त होकर वह इस लोकमें विद्यमान है।

सब इन्द्रियोंके गुणोंका आभास उसमें मिलता है तो भी वह सब इन्द्रियोंसे रहित है। अलिप्त होकर भी वह सबको धारण करने वाला है। वह गुण-रहित होने पर भी गुणोंका भोक्ता है।

वह भूतोंके बाहर है और अन्दर भी है। वह गतिमान है और स्थिर भी है। सूक्ष्म होनेके कारण वह अविज्ञेय है। वह दूर है और समीप भी है।

वह अविभक्त और अखंडित होकर भी सब भूतोंमें विभक्त-सरीखा भी विद्यमान है। वह जानने योग्य ब्रह्म प्राणियोंका पालक, नाशक और कर्ता है।

वह ज्योतियोंकी भी ज्योति है। अन्धकारसे परे कहा जाता है। ज्ञान वही है, जानने योग्य वही है और ज्ञानसे जो प्राप्त होता है वह भी वही है। वह सबके हृदयमें स्थित है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानससे तुलना कीजिये—

आदि अन्त कोउ जासु न पावा। मति अनुमानि निगम अस गावा॥
बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना। कर बिनु करम करइ बिधि नाना॥
आनन रहित सकल रस भोगी। बिनु बानी बकता बड़ जोगी॥
तन बिनु परस नयन बिनु देखा। ग्रहइ घ्रान बिनु बास असेषा॥
असि सब भाँति अलौकिक करनी। महिमा जासु जाइ नहिं बरनी॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६५

गुणातीत की पहचान क्या है ?

समदुःखसुखः स्वस्थः समलोष्टाश्मकाञ्चनः ।
तुल्यप्रियाप्रियो धीरस्तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः ।।
मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्यो मित्रारिपक्षयोः ।
सर्वारम्भपरित्यागी गुणातीतः स उच्यते ।।

१४।२४-२५

पदच्छेद

समदुःखसुखः, स्वस्थः; समलोष्टाश्मकाञ्चनः ।
तुल्यप्रियाप्रियः, धीरः, तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः ।।
मानापमानयोः, तुल्यः, तुल्यः, मित्रारिपक्षयोः ।
सर्वारम्भपरित्यागी, गुणातीतः, सः, उच्यते ।।

समश्लोकी अनुवाद

स्वस्थ सम दुःखसुख समदृष्टि मिट्टी सोना ।
प्रिय अप्रिय एक से धीर सम निन्दा-स्तुति ।।
समता शत्रु-मित्र में सम मान-अपमान ।
सभी आरम्भ का त्यागी गुणातीत कहा जाता ।।

जो सुखदुःखमें सम रहता है, स्वस्थ रहता है, मिट्टीके ढेले, पत्थर और सोनेको समान समझता है. प्रिय अथवा अप्रिय वस्तु प्राप्त होनेपर एक समान रहता है । जिसे अपनी निन्दा या स्तुति समान है, जिसे मान और अपमान समान है, जो मित्रपक्ष और शत्रुपक्षके प्रति समान है और जिसने समस्त आरम्भोंका त्यागकर दिया है, वह गुणातीत कहलाता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६६

अविनाशी पद किसे प्राप्त होता है ?

निर्मानमोहा जितसङ्गदोषा
अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः ।
द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसंज्ञै-
र्गच्छन्त्यमूढाः पदमव्ययं तत् ।।१५।५

पदच्छेद

निर्मान मोहाः, जितसङ्गदोषाः,
अध्यात्मनित्याः, विनिवृत्तकामाः ।
द्वन्द्वैः विमुक्ताः, सुखदुःखसंज्ञैः,
गच्छन्ति, अमूढाः, पदम्, अव्ययम्, तत् ।।

समश्लोकी अनुवाद

जो मान मोह त्यागी अनासक्त
सुख-दुःख द्वन्द्वों से विमुक्त हैं ।
लगे नित्य अध्यात्म चिन्तन में
पाते हैं वे ज्ञानी परमपद ।।

जिसने मान-मोहका त्याग किया है, जिसने आसक्तिसे होनेवाले दोषोंको दूर किया है, जो आत्मामें नित्य निमग्न है, जिसके विषय शान्त हो गये हैं, जो सुख-दुःखरूपी द्वन्द्वोंसे मुक्त है वह ज्ञानी अविनाशी पद को पाता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६७

सूर्य और चन्द्रमा में किसका तेज है ?

यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम् ।
यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम् ।।१५।१२

पदच्छेद

यत्, आदित्यगतम्, तेजः, जगत्, भासयते, अखिलम् ।
यत्, चन्द्रमसि, यत्, च, अग्नौ, तत्, तेजः, विद्धि, मामकम् ।।

समश्लोकी अनुवाद

सूर्य के जिस तेज से जगत पाता प्रकाश ।
चन्द्र-अग्नि का तेज भी मेरा ही तेज जान तू ।।

सूर्य में विद्यमान जो तेज समूचे जगतको प्रकाशित करता है तथा जो तेज चन्द्रमा और अग्निमें है उसे तू मेरा (ईश्वरका) ही तेज समझ ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६८

दैवी सम्पत्ति वाले मनुष्य में कौन गुण होते हैं ?

अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः ।
दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम् ॥
अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम् ।
दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम् ॥
तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता ।
भवन्ति सम्पदं दैवीमभिजातस्य भारत ॥
१६।१—२—३

पदच्छेद

अभयम्, सत्त्वसंशुद्धिः, ज्ञानयोगव्यवस्थितिः ।
दानम्, दमः, च, यज्ञः, च, स्वाध्यायः, तपः, आर्जवम् ॥
अहिंसा, सत्यम्, अक्रोधः, त्यागः, शान्तिः, अपैशुनम् ।
दया, भूतेषु, अलोलुप्त्वम्, मार्दवम्, ह्रीः, अचापलम् ॥
तेजः, क्षमा, धृतिः, शौचम्, अद्रोहः, नातिमानिता ।
भवन्ति, संपदम्, दैवीम्, अभिजातस्य, भारत ॥

समश्लोकी अनुवाद

निर्भयता मन-शुद्धि ज्ञान व योग में निष्ठा ।
दान, दम, यज्ञ तप स्वाध्याय व सरलता ॥
सत्य, अहिंसा अक्रोध शान्ति अपैशुन त्याग ।
जीव-दया अलुब्धता मृदुता लज्जा मर्यादा ॥
पवित्रता क्षमा तेज धैर्य अद्रोह नम्रता ।
उसमें ये गुण होते पाता जो दैवी सम्पदा ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे अर्जुन ! अभय, अन्तःकरणकी शुद्धि, ज्ञान और योगमें निष्ठा, दान, दम, यज्ञ, स्वाध्याय, तप, सरलता, अहिंसा, सत्य, अक्रोध, त्याग, शान्ति, अपैशुन, भूतदया, अलोलुपता, मृदुता, मर्यादा, अचंचलता, तेज, क्षमा, धृति, शौच, अद्रोह और निरभिमानता—इतने गुण उसमें होते हैं जो दैवी सम्पदाको लेकर जन्मा है।

मानससे तुलना कीजिये—

बिषय अलंपट सील गुनाकर। पर दुःख दुःख सुख सुख देखें पर॥
सम अभूतरिपु बिमद बिरागी। लोभामरष हरष भय त्यागी॥
कोमलचित दीनन्ह पर दाया। मन बच क्रम मम भगति अमाया॥
सबहि मानप्रद आपु अमानी। भरत प्रान सम मम ते प्रानी॥
बिगत काम मम नाम परायन। सांति बिरति बिनती मुदितायन॥
सीतलता सरलता मयत्री। द्विज पद प्रीति धर्म जनयत्री॥
ए सब लच्छन बसहिं जासु उर। जानेहु तात संत संतत फुर॥
सम दम नियम नीति नहिं डोलहिं। परुष बचन कबहूँ नहिं बोलहिं॥

निंदा अस्तुति उभय सम ममता मम पद कंज।
ते सज्जन मन प्रानप्रिय गुन मन्दिर सुख पुंज॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६९

आसुरी सम्पदा वाले मनुष्य के क्या लक्षण हैं ?

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च ।
अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ संपदमासुरीम् ।।१६।४

पदच्छेद

दम्भः, दर्पः, अभिमानः, च, क्रोधः, पारुष्यम्, एव, च ।
अज्ञानम्, च, अभिजातस्य, पार्थ, संपदम्, आसुरीम् ।।

समश्लोकी अनुवाद

दम्भ दर्प अहंभाव क्रोध पारुष्य अज्ञता ।
उनमें बसे जन्मे जो आसुरी सम्पदा लिये ।।

हे पार्थ ! दंभ, दर्प, अभिमान, क्रोध, पारुष्य, अज्ञान आदि दुर्गुण उनमें होते हैं जिनका जन्म आसुरी संपदाको लेकर हुआ है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७०

आसुरी मनुष्यों की क्या जीवन-दृष्टि है ?

असत्यमप्रतिष्ठं ते जगदाहुरनीश्वरम् ।
अपरस्परसंभूतं किमन्यत्कामहैतुकम् ।।१६।८

पदच्छेद

असत्यम्, अप्रतिष्ठम्, ते, जगत्, आहुः, अनीश्वरम् ।
अपरस्परसंभूतम्, किम्, अन्यत्, कामहैतुकम् ।।

समश्लोकी अनुवाद

वे कहें असत्य जग निराधार नहिं ईश ।
नर-मादा से सृष्टि है हेतु है केवल भोग ।।

वे कहते हैं, जगत असत्य, निराधार और ईश्वर रहित है। केवल नर-मादाके सम्बन्धसे हुआ है। उसमें विषय-भोगके सिवाय और कोई हेतु नहीं है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७१

आसुरी स्वभाव के मनुष्यों का आचरण कैसा होता है ?

काममाश्रित्य दुष्पूरं दम्भमानमदान्विताः ।
मोहाद्गृहीत्वासद्ग्राहान्प्रवर्तन्तेऽशुचिव्रताः ।।
चिन्तामपरिमेयां च प्रलयान्तामुपाश्रिताः ।
कामोपभोगपरमा एतावदिति निश्चिताः ।।
आशापाशशतैर्बद्धाः कामक्रोधपरायणाः ।
ईहन्ते कामभोगार्थमन्यायेनार्थसंचयान् ।।
इदमद्य मया लब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम् ।
इदमस्तीदमपि मे भविष्यति पुनर्धनम् ।।
असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि ।
ईश्वरोऽहमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान्सुखी ।।
आढ्योऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया ।
यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञानविमोहिताः ।।
अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजालसमावृताः ।
प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचौ ।।
१६।१०-११-१२-१३-१४-१५-१६

पदच्छेद

कामम्, आश्रित्य, दुष्पूरम्, दम्भमानमदान्विताः ।
मोहात्, गृहीत्वा, असद्ग्राहान्, प्रवर्तन्ते, अशुचिव्रताः ।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षि–पाणिनि–प्रज्ञा–अनुसंधान
तिथी......
पु०सं० 1745
भारती पुस्तकालय

चिन्ताम्, अपरिमेयाम्, च, प्रलयान्ताम्, उपाश्रिताः ।
कामोपभोगपरमाः, एतावत्, इति, निश्चिताः ॥
आशापाशशतैः, बद्धाः, कामक्रोधपरायणाः ।
ईहन्ते, कामभोगार्थम्, अन्यायेन, अर्थसंचयान् ॥
इदम्, अद्य, मया, लब्धम्, इमम्, प्राप्स्ये, मनोरथम् ।
इदम्, अस्ति, इदम्, अपि, मे, भविष्यति, पुनः, धनम् ॥
असौ, मया, हतः, शत्रुः, हनिष्ये, च, अपरान्, अपि ।
ईश्वरः, अहम्, अहम्, भोगी, सिद्धः, अहम्, बलवान्, सुखी ॥
आढ्यः, अभिजनवान्, अस्मि, कः, अन्यः, अस्ति, सदृशः, मया ।
यक्ष्ये, दास्यामि, मोदिष्ये, इति, अज्ञानविमोहिताः ॥
अनेकचित्तविभ्रान्ताः, मोहजालसमावृताः ।
प्रसक्ताः, कामभोगेषु, पतन्ति, नरके, अशुचौ ॥

समश्लोकी अनुवाद

दम्भ-मान-मद भरे रख धारणाएँ मिथ्या ।
दुष्पूर कामना वश अशुभ जीवन जीते ॥
वे अनन्त चिन्ताओंका आश्रय लेकर सदा ।
बहु भोग भोगना ही निश्चित ध्येय मानते ॥
काम-क्रोध परायण बहु आश-पाश बद्ध ।
जोड़े धन अन्याय से विषय-भोग निमित्त ॥
मैंने इतना पा लिया पाऊँगा कल और भी ।
इतना धन मेरा है आगे भी पुनः मिलेगा ॥
वह शत्रु मारा मैंनें अन्य को भी दूँगा मार ।
मैं हूँ स्वामी मैं ही भोक्ता सिद्ध, बली तथा सुखी ॥
मैं कुलीन सम्पन्न हूँ अन्य कौन है मुझसा ।
करूँगा यज्ञ दान मैं यो मुदित अज्ञान से ॥
चित्त भ्रान्त है जिनका मोह-जाल में हैं फँसे ।
वे काम-भोग आसक्त गिरते हैं नरक में ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे (आसुरी प्रवृत्तिवाले) मनुष्य दम्भ-मान और मदसे युक्त हुए, तृप्त न होनेवाली कामनाओंका आसरा लेकर, मूढ़ताके कारण गलत धारणाएँ बनाकर अपवित्र जीवन जीते हैं।

अनगिनत चिन्ताओंसे दबे हुए विषय-भोगोंकी तृप्तिको ही जीवनका लक्ष्य समझते हैं।

लालसाओंके जालमें फँसे हुए और काम-क्रोधके परायण हुए वे विषय-भोगोंकी तृप्तिके लिए अन्यायपूर्वक धन-संचयकी चेष्टा करते हैं।

आज मैंने यह पाया है, दूसरे मनोरथ भी पूरा करूँगा। इतना धन मेरे पास एकत्र है, भविष्यमें मुझे और प्राप्त होगा।

इस शत्रुको मैंने मार दिया है, अन्य शत्रुओंको भी मार डालूंगा। मैं स्वामी हूँ, मैं ही उपभोग करने वाला हूँ। मैं सिद्ध हूँ, बलवान हूँ, सुखी हूँ।

मैं धनवान हूँ, कुलीन हूँ, मेरे समान और कौन है ? मैं यज्ञ करूँगा, दान दूँगा; अज्ञानके कारण वे इस प्रकार मूढ़ताकी बातें करते हैं।

वे अनेक भ्रांतियोंमें पड़े, मोह-जालमें फँसे, विषय-भागमें आसक्त रहनेवाले अशुभ नरकमें गिरते हैं।

मानससे तुलना कीजिए—

खलन्ह हृदयँ अति ताप बिसेषी। जरहिं सदा पर संपति देखी॥
जहँ कहुँ निन्दा सुनहिं पराई। हरषहिं मनहुँ परी निधि पाई॥
काम क्रोध मद लोभ परायन। निर्दय कपटी कुटिल मलायन॥
बयरु अकारन सब काहू सों। जो कर हित अनहित ताहू सों॥
झूठइ लेना झूठइ देना। झूठइ भोजन झूठ चबेना॥
बोलहिं मधुर बचन जिमि मोरा। खाइ महा अहि हृदय कठोरा॥

पर द्रोही पर दार रत पर धन पर अपबाद।
ते नर पाँवर पापमय देह धरें मनुजाद॥

लोभइ ओढ़न लोभइ डासन। सिस्नोदर पर जमपुर त्रास न॥
काहू की जौं सुनहिं बड़ाई। स्वास लेहिं जनु जूड़ी आई॥
जब काहू कै देखहिं बिपती। सुखी भए मानहुँ जग नृपती॥
स्वारथ रत परिवार बिरोधी। लंपट काम लोभ अति क्रोधी॥
मातु पिता गुर विप्र न मानहिं। आपु गए अरु घालहिं आनहिं॥
करहिं मोह बस द्रोह परावा। संत संग हरि कथा न भावा॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७२

नरक के तीन द्वार कौन हैं ?

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः ।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् ।।१६।२१

पदच्छेद

त्रिविधम्, नरकस्य, इदम्, द्वारम्, नाशनम्, आत्मनः ।
कामः, क्रोधः, तथा, लोभः, तस्मात्, एतत्, त्रयम्, त्यजेत् ॥

समश्लोकी अनुवाद

काम, क्रोध तथा लोभ नरक-द्वार ये तीन ।
ये सब आत्मघाती हैं अतः तीनों ही त्याज्य हैं ।।

मनुष्यको अधोगतिमें ले जानेवाले नरकके तीन द्वार हैं—काम, क्रोध और लोभ । इसलिए मनुष्यको इन तीनोंका त्याग करना चाहिये ।

मानससे तुलना कीजिए—

काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ ।
सब परिहरि रघुबीरहि भजहु भजहिं जेहिं संत ।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७३

सात्विक मनुष्यों को कैसा आहार प्रिय है ?

आयुःसत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः ।
रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः ॥
१७।८

पदच्छेद

आयुः, सत्त्व, बल, आरोग्य, सुख, प्रीति, विवर्धनाः ।
रस्याः, स्निग्धाः, स्थिराः, हृद्याः, आहाराः, सात्त्विकप्रियाः ॥

समश्लोकी अनुवाद

जो बढ़ावे आयु बल सत्व स्वास्थ्य प्रीति सुख ।
रसीला स्निग्ध आहार प्रिय सात्विक जन को ॥

आयु, सात्विकता, बल, आरोग्य, सुख और प्रीतिको बढ़ानेवाले, रसदार, चिकने पौष्टिक और मनको रुचिकर आहार सात्त्विक लोगोंको प्रिय होते हैं ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७४

राजस मनुष्यों को कैसा आहार प्रिय होता है ?

कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्षविदाहिनः ।
आहारा राजसस्येष्टा दुःखशोकामयप्रदाः ।।१७।९

पदच्छेद

कटु, अम्ल, लवण, अत्युष्ण, तीक्ष्ण, रूक्ष, विदाहिनः ।
आहाराः, राजसस्य, इष्टाः, दुःखशोकामयप्रदाः ।।

समश्लोकी अनुवाद

कटु अम्ल उष्ण तीक्ष्ण रूखा व दाहकारक ।
दुःख – शोक – रोगप्रद आहार राजस-प्रिय ।।

तीखे, खट्टे, नमकीन और बहुत गरम, चटपटे, रूखे और दाहकारक तथा दुःख, शोक और रोग उत्पन्न करनेवाले आहार राजस मनुष्योंको प्रिय लगते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७५

तामस मनुष्यों को कैसा आहार प्रिय लगता है ?

यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत् ।
उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम् ।।१७।१०

पदच्छेद

यातयामम्, गतरसम्, पूति, पर्युषितम्, च, यत् ।
उच्छिष्टम्, अपि, च, अमेध्यम्, भोजनम्, तामसप्रियम् ।।

समश्लोको अनुवाद

नीरस व दुर्गन्धित बासी ठंडा अपवित्र ।
जूठा आहार लगता प्रिय तामस जन को ।।

नीरस, दुर्गन्धित, बासी, ठंडा, जूठा, अपवित्र भोजन तामस मनुष्योंको प्रिय होता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७६

कैसा यज्ञ सात्विक है ?

अफलाकांक्षिभिर्यज्ञो विधिदृष्टो य इज्यते ।
यष्टव्यमेवेति मनः समाधाय स सात्त्विकः ।।१७।११

पदच्छेद

अफलाकांक्षिभिः, यज्ञः, विधिदृष्टः, यः, इज्यते ।
यष्टव्यम्, एव, इति, मनः, समाधाय, सः, सात्त्विकः ।।

समश्लोकी अनुवाद

जो यज्ञ शास्त्रविधि से कर्तव्य समझ होता ।
न हो फल की वासना यज्ञ है वह सात्त्विक ।।

जो यज्ञ शास्त्रविधि से, मन लगाकर, कर्तव्य समझकर किया जाता है और जिसमें फल प्राप्तिकी कामना नहीं रहती वह यज्ञ सात्त्विक है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७७

कैसा यज्ञ राजस है ?

अभिसन्धाय तु फलं दम्भार्थमपि चैव यत् ।
इज्यते भरतश्रेष्ठ तं यज्ञं विद्धि राजसम् ।।१७।१२

पदच्छेद

अभिसन्धाय, तु, फलम्, दम्भार्थम्, अपि, च, एव, यत् ।
इज्यते, भरतश्रेष्ठ, तम्, यज्ञम्, विद्धि, राजसम् ।।

समश्लोकी अनुवाद

केवल दम्भ प्रेरित या फल की कामना से ।
अर्जुन जो किया जाता यज्ञ है वह राजस ।।

अर्जुन ! जो यज्ञ केवल दम्भ से या फल-प्राप्ति को कामना से किया जाता है वह राजस यज्ञ है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७८

कैसा यज्ञ तामस है ?

विधिहीनमसृष्टान्नं मन्त्रहीनमदक्षिणम् ।
श्रद्धाविरहितं यज्ञं तामसं परिचक्षते ।।१७।१३

पदच्छेद

विधिहीनम्, असृष्टान्नम्, मन्त्रहीनम्, अदक्षिणम् ।
श्रद्धाविरहितम्, यज्ञम्, तामसम्, परिचक्षते ।।

समश्लोकी अनुवाद

न मंत्र न शास्त्रविधि न अन्नदान दक्षिणा ।
श्रद्धा से भी रहित जो यज्ञ है वह तामस ।।

शास्त्रविधि से रहित, अन्नदान से रहित, बिना मंत्रके, बिना त्यागके, बिना श्रद्धाके किया हुआ यज्ञ तामस है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७९

शरीर का तप क्या है ?

देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम् ।
ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते ।।१७।१४

पदच्छेद

देव-द्विज-गुरु-प्राज्ञपूजनं, शौचम्, आर्जवम् ।
ब्रह्मचर्यम्, अहिंसा, च, शारीरम्, तपः, उच्यते ।।

समश्लोकी अनुवाद

देव द्विज गुरु विज्ञ पूजन शौच अहिंसा ।
ब्रह्मचर्य सरलता ये कायिक तप कहे ।।

देव, ब्राह्मण, गुरु और विद्वानों की पूजा, पवित्रता, सरलता, ब्रह्मचर्य और अहिंसा—यह शरीर का तप कहलाता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८०

वाणी का तप क्या है ?

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत् ।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते ।।१७।१५

पदच्छेद

अनुद्वेगकरम्, वाक्यम्, सत्यम्, प्रियहितम्, च, यत् ।
स्वाध्याय, अभ्यसनम्, च, एव, वाङ्मयम्, तपः, उच्यते ।।

समश्लोकी अनुवाद

वचन हो सत्य प्रिय हितकारी अनुद्वेगी ।
निरंतर का स्वाध्याय वाणी तप कहा जाता ।।

सत्य; प्रिय, हितकर वचन जिससे दूसरे को उद्वेग न हो और नियमित स्वाध्याय—यह वाणीका तप कहलाता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८१

मानसिक तप क्या है ?

मनःप्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः ।
भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते ।।१७।१६

पदच्छेद

मनःप्रसादः, सौम्यत्वम्, मौनम्, आत्मविनिग्रहः ।
भावसंशुद्धिः, इति, एतत्, तपः, मानसम्, उच्यते ।।

समश्लोकी अनुवाद

प्रसन्न-वृत्ति सौम्यता मौन व आत्मसंयम ।
शुद्ध भावना चित्तकी ये मानस तप कहे ।।

मनकी प्रसन्नता, सौम्यता, मौन, आत्मसंयम तथा भावना शुद्धि—मानसिक तप कहलाता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८२

सात्विक तप क्या है ?

श्रद्धया परया तप्तं तपस्तत्त्रिविधं नरैः ।
अफलाकांक्षिभिर्युक्तैः सात्त्विकं परिचक्षते ।।१७।१७

पदच्छेद

श्रद्धया, परया, तप्तम्, तपः, तत्, त्रिविधम्, नरैः ।
अफलाकांक्षिभिः, युक्तैः, सात्त्विकम्, परिचक्षते ।।

समश्लोकी अनुवाद

फलेच्छा रहित योगी परम श्रद्धा युक्त हो ।
त्रिविध तप करे तो सात्विक तप कहाता ।।

फलकी इच्छा रखे बिना, निर्विकार पुरुषों द्वारा परम श्रद्धा से तीन प्रकारके तपको जब किया जाता है तो वह सात्विक तप कहलाता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८३

राजस तप क्या है ?

सत्कारमानपूजार्थं तपो दम्भेन चैव यत् ।
क्रियते तदिह प्रोक्तं राजसं चलमध्रुवम् ।।१७।१८

पदच्छेद

सत्कार-मान-पूजार्थम्, तपः, दम्भेन, च, एव, यत् ।
क्रियते, तत्, इह, प्रोक्तम्, राजसम्, चलम्, अध्रुवम् ।।

समश्लोकी अनुवाद

सत्कार मान पूजा या दम्भ ही के लिए करे।
अस्थिर अस्थायी वह राजस तप कहाता ।।

जो सत्कार, मान और प्रतिष्ठा के लिए या दम्भपूर्वक किया जाता है वह अस्थिर और अस्थायी तप राजस कहलाता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८४

तामस तप क्या है ?

मूढग्राहेणात्मनो यत्पीडया क्रियते तपः ।
परस्योत्सादनार्थं वा तत्तामसमुदाहृतम् ॥१७।१९

पदच्छेद

मूढग्राहेण, आत्मनः, यत्, पीडया, क्रियते, तपः ।
परस्य, उत्सादनार्थम्, वा, तत्, तामसम्, उदाहृतम् ॥

समश्लोकी अनुवाद

जो पर-अहित करे स्वयं को भी कष्टप्रद ।
दुराग्रह से जो होता ऐसा तप तामस है ॥

जो तप दुराग्रह-प्रेरित स्वयं को क्लेश देने वाला या दूसरे का अहित करने वाला हो वह तामस तप कहलाता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८५

सात्विक दान क्या है ?

दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे ।
देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम् ।।१७।२०

पदच्छेद

दातव्यम्, इति, यत्, दानम्, दीयते, अनुपकारिणे ।
देशे, काले, च, पात्रे, च तत्, दानम्, सात्त्विकम्, स्मृतम् ।।

समश्लोकी अनुवाद

कर्तव्य भाव से दिया बदले की आशा नहीं ।
देश काल पात्र देख वह दान सात्विक है ।।

जो दान ऐसे व्यक्तिको, जिससे किसी प्रतिफलकी आशा नहीं है, इस भावनासे दिया जाता है कि दान देना कर्तव्य है और जो उचित स्थान में, उचित समय पर योग्य व्यक्तिको दिया जाता है, वह दान सात्विक कहा गया है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८६

राजस दान क्या है ?

यत्तु प्रत्युपकारार्थं फलमुद्दिश्य वा पुनः ।
दीयते च परिक्लिष्टं तद्दानं राजसं स्मृतम् ।।१७।२१

पदच्छेद

यत्, तु, प्रत्युपकारार्थम्, फलम्, उद्दिश्य, वा, पुनः ।
दीयते, च, परिक्लिष्टम्, तत्, दानम्, राजसम, स्मृतम् ।।

समश्लोकी अनुवाद

अपेक्षा से बदले की या कामनासे फलकी ।
जो क्लेश से दिया जाता वह दान राजस है ।।

जो दान बदला मिलनेकी आशासे या फल प्राप्तिकी कामनासे दिया जाता है और जिस दानको देनेमें क्लेश होता है वह दान राजस कहा गया है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८७

तामस दान क्या है ?

अदेशकाले यद्दानमपात्रेभ्यश्च दीयते ।
असत्कृतमवज्ञातं तत्तामसमुदाहृतम् ॥१७।२२

पदच्छेद

अदेशकाले, यत्, दानम्, अपात्रेभ्यः, च, दीयते ।
असत्कृतम्, अवज्ञातम्, तत्, तामसम्, उदाहृतम् ॥

समश्लोकी अनुवाद

अयोग्य देश-काल में असत्कार अवज्ञा से ।
अपात्र को दिया जाता वह दान तामस है ॥

जो दान गलत स्थान पर या गलत समय पर अयोग्य व्यक्तिको बिना सम्मानके या तिरस्कारपूर्वक दिया जाता है वह तामसिक दान कहा जाता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८८

बुद्धिमान लोग त्याग किसे कहते हैं ?

काम्यानां कर्मणां न्यासं संन्यासं कवयो विदुः ।
सर्वकर्मफलत्यागं प्राहुस्त्यागं विचक्षणाः ॥१८।२

पदच्छेद

काम्यानाम्, कर्मणाम्, न्यासम्, संन्यासम्, कवयः, विदुः ।
सर्वकर्मफलत्यागम्, प्राहुः, त्यागम्, विचक्षणाः ॥

समश्लोकी अनुवाद

काम्य कर्मों के त्याग को विज्ञ संन्यास कहते ।
सब कर्मों के फल का त्याग ही त्याग कहाता ॥

कामनासे उत्पन्न हुए कर्मोंके त्यागको ज्ञानी संन्यासके नामसे जानते हैं ।

समस्त कर्मोंके फलके त्यागको बुद्धिमान लोग त्याग कहते हैं ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८९

क्या त्याज्य नहीं है ?

यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत् ।
यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम् ।।१८।५

पदच्छेद

यज्ञदानतपःकर्म, न त्याज्यम्, कार्यम्, एव, तत् ।
यज्ञः, दानम्, तपः, च, एव, पावनानि, मनीषिणाम् ।।

समश्लोकी अनुवाद

यज्ञ दान तप कर्म कर्तव्य हैं त्यागो नहीं ।
ये तीनों ही करते हैं पवित्र बुद्धिमान को ।।

यज्ञ, दान और तपरूपी कर्म त्यागने योग्य नहीं हैं। इनको करना ही चाहिये। ये तीनों बुद्धिमानको पवित्र करने वाले हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९०

कैसा त्याग तामस है ?

नियतस्य तु संन्यासः कर्मणो नोपपद्यते ।
मोहात्तस्य परित्यागस्तामसः परिकीर्तितः ।।१८।७

पदच्छेद

नियतस्य, तु, संन्यासः, कर्मणः, न, उपपद्यते ।
मोहात्, तस्य, परित्यागः, तामसः, परिकीर्तितः ।।

समश्लोकी अनुवाद

त्याग नियत कर्म का करना उचित नहीं ।
मोह से उसका त्याग है तामस कहा गया ।।

नियत कर्म त्याग करना (उन्हें नहीं करना) उचित नहीं है। मोहके वश होकर उसका त्याग किया जाय तो वह त्याग तामस कहा जाता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९१

कैसा त्याग राजस है ?

दुःखमित्येव यत्कर्म कायक्लेशभयात्त्यजेत् ।
स कृत्वा राजसं त्यागं नैव त्यागफलं लभेत् ।।१८।८

पदच्छेद

दुःखम्, इति, एव, यत्, कर्म, कायक्लेशभयात्, त्यजेत् ।
सः, कृत्वा, राजसम, त्यागम्, न, एव, त्यागफलम्, लभेत् ।।

समश्लोकी अनुवाद

कर्म दुःखरूप मान त्यागता काय-क्लेश से ।
वह राजस त्यागी है त्याग फल पाता नहीं ।।

दुःखकारक समझकर या शारीरिक कष्टके भयसे जो कर्मका त्याग करता है उसका त्याग राजस है और उसे त्याग करनेका फल नहीं मिलता ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९२

कैसा त्याग सात्विक है ?

कार्यमित्येव यत्कर्म नियतं क्रियतेऽर्जुन ।
संगं त्यक्त्वा फलं चैव स त्यागः सात्त्विको मतः ।।१८।९

पदच्छेद

कार्यम्, इति, एव, यत्, कर्म, नियतम्, क्रियते, अर्जुन ।
संगम्, त्यक्त्वा, फलम्, च, एव, सः, त्यागः, सात्त्विकः, मतः ।।

समश्लोकी अनुवाद

नियत कर्म करता समझ कर कर्तव्य ।
त्याग आसक्ति फलाशा सात्विक त्याग है वही ।।

जो व्यक्ति नियत कर्मको अपना करने योग्य कर्म मानकर करता रहता है और उन कर्मोंके प्रति आसक्ति और फलकी कामनाको त्याग देता है, उसका त्याग सात्त्विक माना गया है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९३

देहधारी के लिए क्या शक्य नहीं है ?

न हि देहभृता शक्यं त्यक्तुं कर्माण्यशेषतः ।
यस्तु कर्मफलत्यागो स त्यागोत्यभिधीयते ।।१८।११

पदच्छेद

न, हि, देहभृता, शक्यम्, त्यक्तुम्, कर्माणि, अशेषतः ।
यः, तु, कर्मफलत्यागी, सः, त्यागी, इति, अभिधीयते ।।

समश्लोकी अनुवाद

देहधारी से अशक्य त्याग सम्पूर्ण कर्मों का ।
जो कर्मफल त्यागी है वही त्यागी कहा जाता ।।

कर्मका सर्वथा त्याग देहधारी के लिए शक्य नहीं है; इसलिए जो (कर्म न छोड़कर) कर्म-फल का त्याग करता है वही त्यागी कहलाता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९४

कर्ममात्र की सिद्धि के कौन पाँच कारण हैं ?

पाञ्चैतानि महाबाहो कारणानि निबोध मे ।
सांख्ये कृतान्ते प्रोक्तानि सिद्धये सर्वकर्मणाम् ।।
अधिष्ठानं तथा कर्ता करणं च पृथग्विधम् ।
विविधाश्च पृथक्चेष्टा दैवं चैवात्र पञ्चमम् ।।
१८।१३-१४

पदच्छेद

पञ्च, एतानि, महाबाहो, कारणानि, निबोध, मे ।
सांख्ये, कृतान्ते, प्रोक्तानि, सिद्धये, सर्वकर्मणाम् ।।
अधिष्ठानम्, तथा, कर्ता, करणम्, च, पृथग्विधम् ।
विविधाः, च, पृथक्, चेष्टाः, दैवम, च, एव, अत्र, पञ्चमम् ।।

समश्लोकी अनुवाद

कौन्तेय सांख्यशास्त्र ने बताये कारण पाँच ।
कर्ममात्र की सिद्धि के तू जान उन्हें मुझसे ।।
ये हैं क्षेत्र तथा कर्ता व भिन्न भिन्न साधन ।
चौथा विविध क्रियाएँ तथा पाँचवां दैव है ।।

हे महाबाहो ! कर्ममात्रकी सिद्धिके विषयमें सांख्यशास्त्रमें पाँच कारण कहे गये हैं। वे मुझसे समझ । वे पाँच ये हैं—क्षेत्र, कर्ता, भिन्न-भिन्न साधन, विविध क्रियाएँ और पाँचवां दैव ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९५

कौन सात्त्विक कर्ता है ?

मुक्तसङ्गोऽनहंवादी धृत्युत्साहसमन्वितः ।
सिद्ध्यसिद्ध्योर्निर्विकारः कर्ता सात्त्विक उच्यते ।।१८।२६

पदच्छेद

मुक्तसङ्गः, अनहंवादी, धृत्युत्साहसमन्वितः ।
सिद्ध्यसिद्ध्योः, निर्विकारः, कर्ता, सात्त्विकः, उच्यते ।।

समश्लोकी अनुवाद

निःसंग निरहंकारी धृति उत्साह पूरित ।
सिद्धि-असिद्धि में तुल्य कर्ता है वह सात्विक ।।

जो आसक्ति और अहंकार रहित है, जिसमें धैर्य और उत्साह है, जो सफलता—निष्फलतामें हर्ष-शोक नहीं करता वह सात्त्विक कर्ता कहलाता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९६

किस कर्म से मनुष्य को सिद्धि प्राप्त होती है ?

यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम् ।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः ।।१८।४६

पदच्छेद

यतः, प्रवृत्तिः, भूतानाम्, येन, सर्वम, इदम्, ततम् ।
स्वकर्मणा, तम्, अभ्यर्च्य, सिद्धिम्, विन्दति, मानवः ।।

समश्लोकी अनुवाद

प्रवर्तक जो भूतों का जो जगत में व्याप्त है ।
उसे पूज स्वकर्म से मानव सिद्धि पा जाता ।।

जिससे सब प्राणी उत्पन्न हुए हैं और जो जगतमें व्याप्त है उस परमात्मा की स्वकर्म द्वारा पूजा करके मनुष्य सिद्धि प्राप्त कर लेता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९७

सहज कर्म क्यों नहीं त्यागना चाहिये ?

सहजं कर्म कौन्तेय सदोषमपि न त्यजेत् ।
सर्वारम्भा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृताः ॥१८।४८

पदच्छेद

सहजम्, कर्म, कौन्तेय, सदोषम्, अपि, न, त्यजेत् ।
सर्वारम्भाः, हि, दोषेण, धूमेन, अग्निः, इव, आवृताः ॥

समश्लोकी अनुवाद

सहज कर्म कौन्तेय त्यागे नहीं सदोष भी ।
कर्म सभी सदोष ज्यों अग्नि जहाँ धूआँ वहीं ॥

हे अर्जुन ! सहज अर्थात् स्वभावतः प्राप्त कर्म, सदोष होने पर भी छोड़ना नहीं चाहिये । जिस प्रकार अग्निके साथ धुआँ रहता है, सभी कर्मोंके साथ कुछ न कुछ दोष रहता ही है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९८

भक्त को भगवान ने क्या आश्वासन दे रखा है ?

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ।
मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे ।।१८।६५

पदच्छेद

मन्मनाः, भव, मद्भक्तः, मद्याजी, माम्, नमस्कुरु ।
माम्, एव, एष्यसि, सत्यम्, ते, प्रतिजाने, प्रियः, असि, मे ।।

समश्लोकी अनुवाद

ध्यान मेरा भक्ति मेरी मुझे नमन-यजन ।
प्रिय तू मुझे पायेगा मेरा है सत्य कथन ।।

मुझसे लगन लगा, मेरा भक्त हो, मेरे लिए यज्ञ कर, मुझे नमस्कार कर । तू मुझे ही प्राप्त करेगा, यह मेरी सत्य प्रतिज्ञा है । तू मुझे प्रिय है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९९

अनन्य भक्ति के क्या लक्षण हैं ?

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ।।१८।६६

पदच्छेद

सर्वधर्मान्, परित्यज्य, माम्, एकम्, शरणम्, व्रज ।
अहम्, त्वा, सर्वपापेभ्यः, मोक्षयिष्यामि, मा, शुचः ।।

समश्लोकी अनुवाद

त्यागो धर्माधर्म शंका मेरी ही शरण आओ ।
पापों से मुक्त करूँगा शोक मत करो तुम ।।

धर्म-कर्मके अनेक प्रपंचोंको त्यागकर तू मेरी ही शरणमें आजा । मैं तुझे सब पापोंसे मुक्त करूँगा । शोक मत कर ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१००

गीता-माता के अध्ययन-श्रवण का क्या माहात्म्य है ?

अध्येष्यते च य इमं धर्म्यं संवादमावयोः ।
ज्ञानयज्ञेन तेनाहमिष्टः स्यामिति मे मतिः ।।
श्रद्धावाननसूयश्च शृणुयादपि यो नरः ।
सोऽपि मुक्तः शुभाँल्लोकान्प्राप्नुयात्पुण्यकर्मणाम् ।।

१८।७०-७१

पदच्छेद

अध्येष्यते, च, यः, इमम्, धर्म्यम्, संवादम्, आवयोः ।
ज्ञानयज्ञेन, तेन, अहम्, इष्टः, स्याम् इति, मे, मतिः ।
श्रद्धावान्, अनसूयः, च, शृणुयात्, अपि, यः, नरः ।
सः, अपि, मुक्तः, शुभान्, लोकान्, प्राप्नुयात्, पुण्यकर्मणाम् ।।

समश्लोकी अनुवाद

हमारा धर्म-संवाद जो पढ़े मनन करे ।
मैं मानता वह मुझे ज्ञानयज्ञ से पूजता ।।
दोषदृष्टि त्याग सुने जो नर श्रद्धायुक्त हो ।
वह भी पाप मुक्त हो पुण्य-धाम को पावेगा ।।

हम-दोनों के इस धर्म-संवादका जो व्यक्ति अध्ययन करेगा, मैं समझूंगा कि उसने ज्ञानयज्ञसे मेरी पूजा की ।

जो मनुष्य द्वेष-रहित होकर श्रद्धापूर्वक सुनेगा वह भी मुक्त होकर पुण्यात्माओंके लोकोंको पावेगा ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीता के सुभाषित

नानुशोचन्ति पण्डिताः २।११	पण्डितजन शोक नहीं करते ।
न हन्यते हन्यमाने शरीरे २।२०	शरीरके नाश होनेपर भी (आत्मा) नहीं मरता ।
जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः २।२७	जन्म लेनेवालेकी मृत्यु निश्चित है ।
कर्मण्येवाधिकारस्ते २।४७	कर्म करनेमें ही तेरा अधिकार है ।
समत्वं योग उच्यते २।४८	समत्व भाव ही योग कहा जाता है ।
कृपणाः फलहेतवः २।४९	कर्मफलकी कामनावाले दीन हैं ।
योगः कर्मसु कौशलम् २।५०	कर्मोंको कुशलतासे करनेका नाम योग है ।
अशान्तस्य कुतः सुखम् २।६६	अशान्तको सुख कैसे (हो सकता है) ?
नियतं कुरु कर्म त्वं ३।८	तू नियत कर्म कर ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युध्यस्व विगतज्वरः ३।३०	सन्तापरहित होकर युद्ध (स्वकर्म) कर। उद्वेगरहित होकर स्वकर्म कर।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः ३।३५	स्वधर्मका पालन करते हुए मृत्यु भी श्रेयस्कर है।
गहना कर्मणो गतिः ४।१७	कर्मकी गति गहन (गूढ़) है।
संशयात्मा विनश्यति ४।४०	संशयवानका विनाश होता है।
न सुखं संशयात्मनः ४।४०	संशयीको सुख नहीं मिलता।
पण्डिताः समदर्शिनः ५।१८	ज्ञानीजन समदृष्टि रखते हैं।
सर्वभूतहिते रताः ५।२५	प्राणिमात्रके हितमें लगे हुए।
उद्धरेदात्मनात्मानं ६।५	आत्मासे आत्माका उद्धार करे। मनुष्य स्वयं ही अपना उद्धार करे।
वासुदेवः सर्वमिति ७।१९	सब वासुदेवमय है।
मामनुस्मर युध्य च ८।७	मेरा स्मरण करते हुए युद्ध (स्वकर्म) करता रह।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योगक्षेमं वहाम्यहम् ९।२२	योग-क्षेम मैं वहन करता हूँ। भक्तके योग-क्षेमका भार ईश्वर उठाता है।
न मे भक्तः प्रणश्यति ९।३१	मेरा (ईश्वरका) भक्त नष्ट नहीं होता।
यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि १०।२५	यज्ञोंमें मैं जपयज्ञ हूँ।
निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन् ११।३३	हे अर्जुन, तुम निमित्तमात्र बनो।
निर्वैरः सर्वभूतेषु ११।५५	प्राणिमात्रके प्रति निर्वैर (वैर-से रहित)।
अद्वेष्टा सर्वभूतानाम् १२।१३	प्राणिमात्रके प्रति द्वेष रहित।
समः शत्रौ च मित्रे च १२।१८	शत्रु-मित्रके प्रति समता।
संतुष्टो येन केनचित् १२।१९	जो कुछ मिल जाय उसीसे सन्तुष्ट।
हृदि सर्वस्य विष्ठितम् १३।१७	वह (ईश्वर) सबके हृदयमें स्थित है।
यो यच्छ्रद्धः स एव सः १७।३	जिसकी जैसी श्रद्धा होती है वैसा ही वह होता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य १८।४६	स्वकर्म द्वारा उसकी (ईश्वरकी) पूजा कर ।
मच्चित्तः सततं भव १८।५७	सतत मेरेमें (ईश्वरमें) चित्त लगा ।
यथेच्छसि तथा कुरु १८।६३	जैसी इच्छा वैसा करो । जो उचित लगे वही करो ।
मामेकं शरणं व्रज १८।६६	एक मेरी ही शरण आओ ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीता-माता

महात्मा गांधी

जब मेरा मन शंकाओं और निराशाओं से घिर जाता है और जहाँ तक दृष्टि जाती है, मुझे प्रकाश की एक किरण भी नहीं दिखाई देती तब मैं 'भगवद्गीता' की शरण लेता हूँ और उसमें मुझे कोई-न-कोई शान्तिदायी श्लोक मिल ही जाता है और तब दारुण दुःख के बीच भी मैं तत्काल मुस्कुरा उठता हूँ। मेरे जीवनमें सांसारिक दुःख और शोक के न जाने कितने प्रसंग आए हैं और अगर वे मुझपर कोई खरोंच नहीं छोड़ पाये तो इसका कारण भगवद्गीता की शिक्षा ही है।

□ □ □

गीता आध्यात्मिक सत्यको हृदयमें बैठानेके लिए भौतिक उदाहरणका आश्रय लेती है। यह चचेरे भाइयोंके बीच होने-वाली लड़ाईका नहीं बल्कि हममें रहनेवाली दो प्रकृतियों—अच्छाई और बुराईके बीच होनेवाली लड़ाईका वर्णन है।

□ □ □

भगवती गीता माता द्वारा उपदिष्ट सनातन धर्मके अनुसार जीवनका साफल्य बाह्य आचार और कर्मकाण्डमें नहीं, वरन् सम्पूर्ण चित्त-शुद्धिमें और शरीर, मन और आत्मासहित समग्र व्यक्तित्वको परब्रह्मके साथ एकाकार कर देने में है।

□ □ □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फलकी इच्छाके त्यागका शुद्ध अर्थ तो यही है कि त्यागी उस फलको जानता है। किन्तु वह इसकी चिन्ता नहीं करता कि यह फल उसे स्वयं प्राप्त होगा या नहीं। फलकी इच्छा न करना मनुष्यको धैर्यवान बनाता है और उससे साधनकी शुद्धताकी रक्षामें सहायक होता है।

□ □ □

मनके विकारोंका शमन ऐसा काम नहीं, जो एक क्षणमें किया जा सके। यह तो परम पुरुषार्थ और इसलिए युगोंका काम है। जो मनुष्य इस जन्ममें विकारोंको जीत लेता है उसने इन्हें अपने इसी जन्ममें जीता है, ऐसा मानने की बजाय यह मानना ज्यादा उचित होगा कि यह उसके अनेक जन्मोंके प्रयत्नोंका परिपाक है।

□ □ □

सुख और दुःखको समभावसे स्वीकार करना यही गीताकी सीख है।

□ □ □

गीताका अध्ययन छिद्रान्वेषी बुद्धिसे नहीं, बल्कि प्रार्थनाके भावसे करना चाहिये और उसकी हिदायतों पर अमल करना चाहिये।

□ □ □

गीता-माता पुकारकर कह रही है कि सबसे मन हटाकर मुझमें लगाओ और फिर सेवा कार्य करो।

□ □ □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच्चे अनासक्त मनुष्यका काम आसक्तिवालेकी तुलनामें कई गुना अधिक शोभा पाता है और अधिक सफल होता है। आसक्तिवाला कभी हक्का बक्का बन सकता है, चिन्ताके कारण कुछ भूल सकता है। उसमें द्वेष भी पैदा हो सकता है और द्वेष-वश वह काम बिगाड़ भी सकता है। अनासक्तिवाला इन सब दोषोंसे मुक्त रहता है।

□ □ □

अनासक्तिका गुण यह है कि काम करते हुए भी उसका बोझ न लगे।

□ □ □

जो भगवान् की ही रटन करता है और उसके निमित्त काम करता है, उसकी सफलताका भार भगवान उठा लेता है। वही उसको रास्ता दिखाता है। फिर हम चिन्ता क्यों करें।

□ □ □

हम प्रयत्नके स्वामी हैं, फलके नहीं।

□ □ □

हमारा आनंद हमारे धर्म पालनमें है। कार्यकी सफलता अथवा संयोगोंकी अनुकूलतामें नहीं।

□ □ □

मेरे लिए 'गीता' रत्नोंकी खान है। तुम्हारे लिए भी वह रत्नोंकी खान बन जाये; जीवन-पथमें गीता तुम्हारी सतत संगिनी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे, पथ-प्रदर्शिका बनी रहे। गीता तुम्हारा पथ प्रकाशित करे, तुम्हारे प्रयत्नोंको प्रतिष्ठापूर्ण बनाये।

□ □ □

राम तो कहते हैं कि मुझसे मिलनाहो तो इस संसारसे भाग जा। मगर शरीरको भगानेसे भागा नहीं जाता। असारताकी वृत्ति पैदा करके चौबीस घंटे काम करते हुए भी हम रामसे मिल सकते हैं। यही बात गीतामें सिखलाई गई है। गीताको मैं इसीलिए आध्यात्मिक शब्दकोष मानता हूँ।

□ □ □

मैं निवृत्ति-धर्मको मानता हूँ। परन्तु यह निवृत्ति प्रवृत्तिमें छिपी हुई होनी चाहिये। देह-मात्र प्रवृत्तिके बिना पल-भर भी टिक नहीं सकता, यह स्वयं सिद्ध वस्तु है। प्रत्येक साँस जो हम लेते हैं प्रवृत्ति-सूचक है, वहाँ निवृत्तिका अर्थ यही हो सकता है कि शरीर निरन्तर प्रवृत्त रहने पर भी आत्मा निवृत्त रहे, अर्थात उसके विषयमें अनासक्त रहे। इसलिए निवृत्ति-परायण मनुष्य सिर्फ परमार्थके लिए ही अपनी प्रवृत्ति जारी रखे। अर्थात मुझे तो यह प्रतीत होता है कि अनासक्त रहकर परमार्थके लिए की गयी प्रवृत्ति ही निवृत्ति है, फिर चाहे वह खेती हो या सूत कातना हो या अन्य कोई ऐसी प्रवृत्ति हो जो परमार्थ कही जा सकती हो।

□ □ □

गीताकी भावनासे प्रेरित होकर काम करनेवाले लोग कभी भी शक्ति से अधिक काम करके अपने आपको थकाते नहीं हैं,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

क्योंकि वे सर्वथा निरपेक्ष रहकर काम करते हैं और पूर्णतः निरपेक्ष रहनेका मतलब यह है चिन्तासे पूरी तरह छुटकारा। हम जब अपने-आपको ईश्वरके हाथका एक साधन मानकर काम करते हैं और स्वयंको पूरी तरह उसीके हाथों समर्पित कर देते हैं, तब फिर फल जो भी निकले चिन्ता किस बातकी। विक्षुब्ध होनेका तब कोई कारण नहीं रह जाता, भले ही क्षितिज पर कुछ समयके लिये बादलोंकी कालिमा गहनसे-गहनतर हो उठे।

□ □ □

ईश्वरको सूत्रधार कहते हैं। सूत्रमें पिरोए हुए मोतियों की भाँति यह ब्रह्माण्ड भी परमात्मा रूपी डोरेमें पिरोया हुआ है— 'सूत्रे मणिगणा इव'

□ □ □

प्रयत्नशीलको सफलता अवश्य मिलती है। यह गीता का वचन है जो कभी निष्फल नहीं होता।

□ □ □

गीता के द्वितीय अध्यायमें जो युद्धकी बात है उसका शब्दार्थ करें तो अवश्य भौतिक युद्ध है। परन्तु गीताका भाव हमको अन्तर युद्धकी ओर ले जाता है उसमें मेरे दिलमें थोड़ा भी सन्देह नहीं है।

□ □ □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो भी व्यक्ति अपनी शक्तिसे ज्यादा कुछ करनेकी कोशिश करता है, वह मूढ़ है। जो अपनी शक्तिके अनुसार अपने कर्तव्यका पालन करता है, वह धन्य है।

□ □ □

मनुष्यको अपनी सामर्थ्यसे बाहर कोई काम हाथमें नहीं लेना चाहिए और अपनी सामर्थ्यसे कम काम करनेका लोभ मनमें नहीं रखना चाहिए। जो अपनी सामर्थ्यसे बाहर काम करनेका प्रयत्न करता है वह अभिमानी है, आसक्त है। और जो अपनी सामर्थ्यसे कम काम करता है वह चोरी करता है।

□ □ □

मेरे लिए तो गीता ही संसारके सब धर्म-ग्रन्थोंकी कुञ्जी हो गई है। संसारके धर्म-ग्रन्थोंमें गहरे से गहरे जो रहस्य भरे हुए हैं उन सबको यह मेरे लिए खोलकर रख देती है। उन सब धर्म-ग्रंथोंको मैं हिन्दू धर्म-शास्त्रोंकी ही तरह आदर-भावसे देखता हूँ। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी, यहूदी आदि नाम तो सुविधाके लिए रख लिए गए हैं। जब मैं इस बातको दृष्टिके सामनेसे हटा देता हूँ तो फिर मेरे लिए सब एक हैं। हम सब उसी परमात्माकी सन्तान हैं।

□ □ □

गीता सबकी माता है। वह किसीको भी दुतकारती नहीं है। उसका द्वार जो भी उसे खटखटाए उसीके लिए खुला है। गीताका सच्चा अनुयायी यह नहीं जानता कि निराशा क्या है। वह सदा शाश्वत आनन्द और शान्तिकी स्थितिमें रहता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु जो संशयात्मा है या जिसे अपनी बुद्धि और विद्याका अभिमान है, वह उस शान्ति और आनन्दको प्राप्त नहीं कर सकता। वह तो केवल उसीके लिए है जो विनम्र है और जिसकी उपासनामें निष्ठाकी पूर्णता और मनकी अनन्य एकाग्रता है। आजतक कोई भी मनुष्य जिसने गीताकी इस भावनासे उपासना की हो, निराश नहीं हुआ है।

□ □ □

सत्यके मार्गपर चलना और प्रपञ्च अर्थात् प्रवृत्तिसे अलग रहना आकाशपुष्प जैसी बात हुई। जो प्रवृत्तिसे अलग रहता है वह किस मार्गपर चलता है—कैसे कहा जाय। सत्यके मार्ग पर चलनेमें ही प्रवृत्ति प्रवेश आ जाता है। बगैर प्रवृत्तिके सत्य मार्गपर चलने न चलनेका कोई मौका ही नहीं रहता। गीता-माताने कई श्लोकोंसे स्पष्ट किया है कि मनुष्य बगैर प्रवृत्ति एक क्षणके लिए भी रह नहीं सकता। भक्त और अभक्त-में भेद यह है कि एक पारमार्थिक दृष्टिसे प्रवृत्तिमें रहता है और प्रवृत्ति में रहते हुए सत्य को कभी छोड़ता नहीं है और रागद्वेषादिको क्षीण करता है। दूसरा अपने भोगोंके ही लिए प्रवृत्तिमें मस्त रहता है, और अपना कार्य सिद्ध करनेके लिए असत्यादि आसुरी चेष्टासे अलग रहनेकी कोशिश तक भी नहीं करता है। प्रपञ्च कोई निंद्य वस्तु नहीं है। प्रपञ्चके ही मारफत भगवद्दर्शन शक्य है। मोहजनक प्रपञ्च निंद्य और सर्वथा त्याज्य है। यह मेरा दृढ़ अभिप्राय है और अनुभव है।

□ □ □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवनका मार्ग—यदि कोई उसे धर्ममय निष्ठासे ग्रहण करे तो—बहुत तंग है, दुर्गम है। इसे खड्गकी धार कहा गया है। जहाँ आपने इधर-उधर देखा कि अपना पतन निश्चित समझिए। गीताकी शिक्षा है कि जिसके लिए तुम्हारा जन्म नहीं हुआ है उस परधर्मसे स्वधर्म तुम्हारे लिए लाख गुना अच्छा है।

□ □ □

सब अपने स्वभावको एक हद तक ही जीत सकते हैं। इसीलिए गीता एक जगह कहती है कि 'निग्रह करो' और दूसरी जगह कहती है 'निग्रह करनेसे क्या होगा?' रबरको भी एक हद तक ही खींचा जा सकता है। उसे उससे अधिक खींचें तो टूट जाए। अतः हम सबको अपनी शक्तिके अनुसार संयम करना चाहिए और आगे बढ़ते रहना चाहिए।

□ □ □

गीताका संदेश गीताके दूसरे अध्यायमें मिलता है जहाँ श्रीकृष्ण स्थितप्रज्ञता और समत्वकी बात करते हैं। गीताके दूसरे अध्यायके अन्तिम १९ श्लोकोंमें कृष्ण यह समझाते हैं कि यह स्थिति कैसे प्राप्त की जा सकती है। वे हमें बताते हैं कि यह अपने समस्त विकारोंको नष्ट करके प्राप्त की जा सकती है।

□ □ □

वहाँ युद्धका उल्लेख जरूर है, पर वह युद्ध अन्दर चल रहा है। पाण्डव और कौरव सत्य और असत्यकी आन्तरिक शक्तियाँ हैं। वह युद्ध मानव-हृदयमें चलने वाला देवों और असुरोंका युद्ध है।

□ □ □

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयत्नका समूचा क्षेत्र हमारे हाथमें है। परिणाम क्षेत्र ईश्वरने अपने हाथमें रखा है।

□ □ □

पूर्ण समर्पणका अर्थ है, सब चिन्ताओंसे मुक्ति। बच्चा किसी बातकी चिन्ता नहीं करता। वह कुदरती तौर पर जानता है कि माँ-बाप उसकी फिकर रखते हैं। यह बात बड़े लोगोंके लिए कितनी सच होनी चाहिए? इसीमें श्रद्धाकी या गीताकी अनासक्तिकी परीक्षा है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीता संस्कृत-हिन्दी कोश

(इस पुस्तक में उद्धृत श्लोकों तक सीमित)

१

अशोच्यान् = न शोक करने योग्य; अन्वशोचः = शोक करता है; प्रज्ञावादान् = पंडिताई के वचन; भाषसे = कहता है; गतासून् = जिनके प्राण चले गए हैं; अगतासून् = जिनके प्राण नहीं गये हैं; न अनुशोचन्ति = शोक नहीं करते हैं।

२

देहिनः = जीवात्मा की; अस्मिन् = इस; देहान्तर प्राप्तिः = अन्य शरीर की प्राप्ति; धीरः = धीर पुरुष; मुह्यति = मोहित होता है।

३

मात्रास्पर्शाः = इन्द्रियों के स्पर्श, इन्द्रियों और विषयों के संयोग; शीतोष्ण-सुख-दुःखदाः = सर्दी-गर्मी और सुख-दुःख को देने वाले; आगमापायिनः = आने-जाने वाले; तितिक्षस्व = सहन कर।

४

जायते = जन्मता है; म्रियते = मरता है; भूत्वा = होकर; अजः = अजन्मा; भूयः = फिर; भविता = होने वाला; हन्यमाने = नाश होने पर; न हन्यते = नाश नहीं होता है।

५

वासांसि = वस्त्रोंको; जीर्णानि = पुराने; विहाय = त्यागकर; नवानि = नये; गृह्णाति = ग्रहण करता है; अपराणि = दूसरे; संयाति = प्राप्त करता है; नवानि = नूतन; देही = आत्मा।

६

छिन्दन्ति = काट सकते हैं; दहति = जला सकती है; आपः = जल; क्लेदयन्ति = गीला कर सकते हैं; शोषयति = सुखा सकता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७

जातस्य = जन्मने वालेकी; ध्रुवः = निश्चित; मृतस्य = मरनेवालेका; अपरिहार्ये = अनिवार्य, उपायरहित; अर्थे = विषयमें; शोचितुम् = शोक करने; न अर्हसि = योग्य नहीं है।

८

देही = आत्मा; सर्वस्य = सबके; अवध्यः = अवध्य है; भूतानि = प्राणियोंके लिये।

९

कृत्वा = करके, समझकर; युद्धाय = युद्ध के लिये; युज्यस्व = प्रवृत्त हो; जयाजयौ = जय-पराजय; अवाप्स्यसि = प्राप्त होगा।

१०

कर्मणि = कर्म करनेमें; एव = ही; फलेषु = फलमें; कदाचन = कदापि; कर्मफलहेतुः = कर्मफलकी कामनावाला; अकर्मणि = कर्म न करनेमें; संगः = प्रीति; मा = नहीं।

११

योगस्थः = योग में स्थित हुआ; सङ्गम् = आसक्ति; समत्वं = समत्वभाव ही; सिद्ध्यसिद्ध्योः = सिद्धि और असिद्धिमें; समः = समान बुद्धिवाला; भूत्वा = होकर।

१२

अनभिस्नेहः = स्नेहरहित हुआ; अभिनन्दति = हर्षित होता है; द्वेष्टि = द्वेष करता है; प्रज्ञा = बुद्धि; प्रतिष्ठिता = स्थिर है; संहरते = समेट लेता है; अंगानि = अंगोंको; कूर्मः = कछुआ; इन्द्रियार्थेभ्यः = इन्द्रियोंके विषयोंसे।

१३

ध्यायतः = चिन्तन करने वाले; पुंसः = पुरुषकी; संगः = आसक्ति; उपजायते = हो जाती है; कामः = कामना; संजायते = उत्पन्न होती है; क्रोधात् = क्रोध से; संमोहः = मोह, अविवेक; स्मृतिविभ्रमः = स्मृति भ्रमित हो जाती है; प्रणश्यति = अधः पतन होता है।

१४

चरताम् = विचरती हुई; अनु = साथ; वीधियते = रहता है; प्रज्ञाम् = बुद्धिको; नावम् = नावको; अम्भसि = पानीमें।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५

आपूर्यमाणम् = सब ओरसे परिपूर्ण; आपः = पानी; प्रविशन्ति = समा जाते हैं; आप्नोति = प्राप्त करता है; यद्वत् = जैसे; अचलप्रतिष्ठम् = अचल प्रतिष्ठा वाले; तद्वत् = वैसे ही।

१६

कश्चित् = कोईभी; क्षणम् = क्षणमात्र; जातु = किसी कालमें; अकर्मकृत् = बिना कर्म किये; प्रकृतिजैः = प्रकृति से उत्पन्न हुए; गुणैः = गुणों द्वारा; अवशः = विवश हुआ।

१७

संयम्य = दमन करके रोक कर; मनसा = मनसे; इन्द्रियार्थान् = इन्द्रियके भोगोंको; विमूढात्मा = मूढ़बुद्धि; मिथ्याचारः = मिथ्याचारी, दम्भी।

१८

असक्तः = अनासक्त भावसे; समाचर = भलो-भाँति आचरण कर; आचरन् = करता हुआ; परम् = परमात्माको; आप्नोति = प्राप्त करता है।

१९

संन्यस्य = समर्पित करके; निराशीः = आशारहित, आसक्तिरहित; अध्यात्म चेतसा = अध्यात्मवृत्ति रखकर; निर्ममः = ममतारहित; विगतज्वरः = सन्तापरहित, उद्वेगरहित।

२०

समुद्भवः = उत्पन्न हुआ; महाशनः = तृप्त न होनेवाला; एनम् = इसको; महापाप्मा = बड़ा पापी; विद्धि = जान; वैरिणम् = वैरी, शत्रु।

२१

धूमेन = धूएँसे; आव्रियते = ढका रहता है; वह्निः = अग्नि; नित्यवैरिणा = नित्य वैरीसे; दुष्पूरेण = न पूर्ण होनेवाले; आदर्शः = दर्पण; मलेन = मलसे; उल्बेन = जेरसे; आवृतम् = ढका हुआ है; अनलेन = अग्निके समान।

२२

अधिष्ठानम् = निवास-स्थान; विमोहयति = मोहित करता है; ज्ञानम् = ज्ञानको आवृत्य = ढककर; देहिनम् = जीवात्माको।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
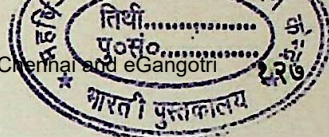
२३

नियम्य = वशमें करके; हि = निश्चयपूर्वक; प्रजहि = मार; सः = वह (आत्मा) है; आत्मानम् = मनको; दुरासदम् = दुर्जय; पराणि = श्रेष्ठ; इन्द्रियेभ्यः = इन्द्रियोंसे; मनसः = मनसे; परतः = उत्तम; संस्तभ्य = वशमें करके; कामरूपम् = कामरूपी; जहि = मार ।

२४

समारम्भाः = कार्य, प्रवृत्ति; कामसंकल्पवर्जिताः = कामना और संकल्प से रहित हैं; ज्ञानाग्निदग्धकर्माणम् = ज्ञानरूपी अग्नि द्वारा भस्म हुए कर्मों वाले; बुधाः = ज्ञानीजन; आहुः = कहते हैं ।

२५

यदृच्छालाभसंतुष्टः = अपने आप जो कुछ प्राप्त हो उसीमें सन्तोष करने वाला; सिद्धावसिद्धौ = सिद्धि-असिद्धिमें; द्वन्द्वातीतः = द्वन्द्वों से मुक्त; विमत्सरः = ईर्ष्यारहित; कृत्वा = कर्म करने पर ।

२६

लभते = प्राप्त करता है; तत्परः = तत्पर हुआ, अनुरक्त; संयतेन्द्रियः = जितेन्द्रिय; अचिरेण = अतिशीघ्र; अधिगच्छति = प्राप्त करता है ।

२७

अज्ञः = अज्ञानी; अश्रद्दधानः = श्रद्धारहित; विनश्यति = नाशको प्राप्त होता है; संशयात्मनः = शंकाशील, संशयी ।

२८

ज्ञेयः = जानना चाहिये; द्वेष्टि = द्वेष करता है; कांक्षति = कामना करता है; प्रमुच्यते = मुक्त हो जाता है ।

२९

ब्रह्मणि = परमात्मामें; आधाय = समर्पित करके; पद्मपत्रम् = कमल के पत्ते; संगम् = आसक्तिको; अम्भसा = जलसे; इव = समान; न लिप्यते = लिप्त नहीं होता ।

३०

युक्तः = युक्त, योगी, ईश्वर परायण; अयुक्तः = सकामी, अयोगी; नैष्ठिकीम् = निष्ठावाली, अचल; आप्नोति = प्राप्त होता है; कामकारेण = कामनावाला होकर ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३१

विद्याविनयसम्पन्ने = विद्या और विनय युक्त; हस्तिनि = हाथी; समदर्शिनः = समदर्शी; गवि = गाय; शुनि = कुत्ता; श्वपाके = चाण्डाल ।

३२

संस्पर्शजा = इन्द्रियों और विषयों के संयोग से उत्पन्न होनेवाले; दुःखयोनयः = दुःख के हेतु; बुधः = बुद्धिमान, विवेकी; आद्यन्तवन्तः = आदि-अन्त-वाले अर्थात् अनित्य ।

३३

शक्नोति = समर्थ है; सोढुम् = सहन करनेमें; प्राक् = पूर्व, पहले; विमोक्षणात् = त्यागनेसे; कामक्रोधोद्भवम् = काम-क्रोध से उत्पन्न हुए; वेगम् = वेगको युक्तः = योगी ।

३४

लभन्ते = प्राप्त करते हैं; क्षीणकल्मषाः = जिनके पाप नष्ट हो गए हैं। छिन्नद्वैधाः = संशयसे निवृत्त हुए; यतात्मानः = जितेन्द्रिय ।

३५

अनाश्रितः = आश्रय न लेकर, न चाहता हुआ; निरग्निः = अग्निको त्यागनेवाला; अक्रियः = क्रियाहीन, कर्तव्य कर्मोंको त्यागनेवाला ।

३६

इन्द्रियार्थेषु = इन्द्रियों के भोगोंमें; कर्मसु = कर्मोंमें; अनुषज्जते = आसक्त होता है; सर्वसंकल्पसंन्यासी = सर्व संकल्पों का त्यागी ।

३७

उद्धरेत् = उद्धार करे; अवसादयेत् = पतनमें पहुँचाये; वर्तेत = वर्तता है; रिपुः = शत्रु; येन = जिसके द्वारा; अनात्मनः = जिसने मनको वशमें नहीं किया है; शत्रुत्वे = शत्रुतामें; शत्रुवत् = शत्रु की भाँति ।

३८

अश्नतः = खाने वालेका; एकान्तम् = बिल्कुल; अनश्नतः = न खाने वालेका स्वप्नशीलस्य = सोने वालेका; युक्ताहारविहारस्य = यथायोग्य आहार-बिहार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने वालेका; जाग्रतः = जागने वालेका; चेष्टस्य = चेष्टा करने वालेका; युक्तस्वप्नावबोधस्य = नियमित सोने और जागने वालेका; दुःखहा—दुःखोंका नाश करनेवाला ।

३९

निवातस्थः = वायुरहित स्थानमें स्थित; दीपः = दीपक; न इंगते = चलायमान नहीं होता है; स्मृता = कही गयी है; यतचित्तस्य = जीते हुए चित्तकी; युञ्जतः = संबन्ध जोड़ने वालेका, साधन करने वालेका ।

४०

आत्मनि = आत्मामें, अपने अन्दर; सर्वभूतस्थम् = भूतमात्रमें स्थित; आत्मनम् = आत्माको, अपनेको; ईक्षते = देखता है; सर्वभूतानि = भूतमात्रको ।

४१

पश्यति = देखता है; न प्रणश्यामि = अदृश्य नहीं हूँ, लुप्त नहीं हूँ; न प्रणश्यति = अदृश्य नहीं है; सर्वम् = सबको ।

४२

आत्मौपम्येन = आत्माके समान, अपने समान; परमः = परम श्रेष्ठ ।

४३

दुर्निग्रहम् = कठिनतासे वशमें होने वाला; गृह्यते = वशमें होता है; अभ्यासेन = अभ्याससे; वैराग्येण = वैराग्यसे ।

४४

इह = इसलोकमें; कश्चित् = कोई भी; गच्छति = प्राप्त होता है; अमुत्र = परलोकमें, दुर्गतिम् = दुर्गतिको ।

४५

प्रयत्नात् = विशेष प्रयत्नसे; संशुद्धकिल्बिषः = पापोंसे अच्छी प्रकार शुद्ध होकर; अनेक जन्मसंसिद्धः = अनेक जन्मों से शुद्ध होता हुआ, अनेक जन्मोंसे सिद्धि पाता हुआ; यतमानः = यत्न करता हुआ ।

४६

मत्तः = मुझसे; परतरम् = सिवाय, श्रेष्ठ; मणिगणाः = मणियोंका समूह; किञ्चित = कुछ भी; सूत्रे = सूत्रमें; प्रोतम् = गुंथा हुआ है ।

९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४७

एषा = यह; दुरत्यया = बड़ी दुस्तर है; प्रपद्यन्ते = शरण लेते हैं; तरन्ति = तर जाते हैं।

४८

मायया = माया द्वारा; अपहृतज्ञानाः = हरे हुए ज्ञान वाले; नराधमाः = मनुष्योंमें अधम; आश्रिताः = धारण किये हुए।

४९

बहूनाम् = बहुत; जन्मनाम् = जन्मोंके; अन्ते = अन्तमें; सुदुर्लभः = अति दुर्लभ है।

५०

अनुस्मर = स्मरण कर; युध्य च = युद्ध भी कर; असंशयम् = निःसन्देह; एष्यसि = प्राप्त होगा।

५१

नित्यशः = नित्य ही; नित्ययुक्तस्य = निरन्तर मेरेमें युक्त हुए; सुलभः = सुलभ हूँ; स्मरति = स्मरण करता है।

५२

भक्त्या = भक्तिसे; अन्तःस्थानि = अन्तर्गत; अनन्यया = अनन्य; ततम् = व्याप्त है।

५३

अनन्याः = अनन्य भावसे; पर्युपासते = भजते हैं, उपासना करते हैं; नित्याभियुक्तानाम् = नित्य मेरेमें ही रत रहने वालों का; योगक्षेम = अप्राप्त की प्राप्ति और प्राप्त की रक्षा; वहामि = वहन करता हूँ।

५४

तोयं = जल; भक्त्युपहृतम् = भक्ति भावसे अर्पण किया हुआ; अश्नामि = खाता हूँ; प्रयच्छति = अर्पण करता है; प्रयतात्मनः = प्रयत्नशील मनुष्यका।

५५

करोषि = करता है; जुहोषि = हवन करता है; कुरुष्व = कर; अश्नासि = खाता है; ददासि = दान देता है; मदर्पणम् = मेरे अर्पण।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

तिथी..........
पु०सं०............
भारती पुस्तकालय
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५६

व्यपाश्रित्य = शरण होकर; यान्ति = प्राप्त होते हैं; पापयोनयः = पापयोनि वाले; परम् = परम् ।

५७

गुडाकेश = अर्जुन; आदिः = आदि; मध्यम् = मध्य; अन्तः = अन्त; भूतानाम् = प्राणियोंका; सर्वभूताशयस्थितः = सब प्राणियोंके हृदयमें स्थित ।

५८

आदिदेवः = आदिदेव; निधानम् = आश्रय; वेद्यम = जानने योग्य; शशांकः = चन्द्रमा; पुरस्तात् = आगेसे; अनन्तवीर्य = अनन्त सामर्थ्यवाले; समाप्नोषि = व्याप्त किये हुए हैं; सर्वम् = सारे संसारको; पुराणः = सनातन; वेत्ता = जाननेवाले; ततम् = व्याप्त है; सहस्रकृत्वः = हजारों बार; पृष्ठतः = पीछेसे; अमितविक्रमः = अनन्त पराक्रमशाली; सर्वः = सर्वरूप ।

५९

मत्कर्मकृत = मेरा कार्य करनेवाला; मत्परमः = मेरे परायण; निर्वैरः = वैर-भावसे रहित; मद्भक्त = मेरा भक्त; एति = प्राप्त होता है ।

६०

क्लेशः = कष्ट, परिश्रम; अव्यक्तासक्तचेतसाम् = निराकारमें आसक्त चित्त वालोंको; देहवद्भिः = देहाभिमानियोंको; अधिकतरः = विशेष है ।

६१

संन्यस्य = अर्पण करके; नचिरात् = शीघ्र ही; मृत्युसंसारसागरात् = मृत्युरूप संसार-सागरसे; समुद्धर्ता = उद्धार करनेवाला; आवेशितचेतसाम् = चित्तको लगाने वाले प्रेमी भक्तोंका ।

६२

अद्वेष्टा = द्वेषभावसे रहित; निर्ममः = ममतासे रहित; यतात्मा = मन और इन्द्रियों सहित शरीरको वशमें किए हुए; यस्मात् = जिससे; हर्षामर्षभयोद्वेगैः = सुख-दुःख-भय आदि उद्वेगोंसे; अनपेक्षः = आकांक्षासे रहित; दक्षः = कुशल; गतव्यथः = दुःखोंसे छूटा हुआ; सर्वारम्भपरित्यागी = सब आरम्भका त्याग करने वाला, संकल्प मात्रका जिसने त्याग किया है; शीतोष्णसुखदुःखेषु = सर्दी-गर्मी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और सुख-दुःखादि द्वन्द्वोंमें; संगविवर्जितः = आसक्तिसे रहित; अनिकेतः = रहनेके स्थानमें ममतासे रहित; धर्म्यामृतम् = धर्ममय अमृत; मैत्रः = सबसे मित्रभाव रखनेवाला; क्षमी = क्षमावान; अर्पितमनोबुद्धिः = अर्पण किए हुए मन बुद्धिवाला; उद्विजते = उद्वेगको प्राप्त होता है; शुचिः = बाहर-भीतरसे पवित्र; उदासीनः = पक्षपातसे रहित; उक्तम् = कहा गया।

६३

अमानित्वम् = विनम्रता; क्षान्तिः = क्षमाभाव; स्थैर्यम् = स्थिरता;अनहंकार = अहंकारका अभाव; जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम् = जन्म, मृत्यु, जरा, व्याधि और दुःख—जैसे दोषोंका निरंतर भान; अनभिष्वंगः = ममता का न होना; समचित्तत्वम् = चित्तका सम रहना; इष्टानिष्टोपपत्तिषु = अनुकूल-प्रतिकूल की प्राप्तिमें; अनन्ययोगेन = अनन्य योगसे, अनन्य भावसे; अव्यभिचारिणी = एकनिष्ठ; विविक्तदेशसेवित्वम् = एकान्त स्थानमें रहनेकी वृत्ति; जनसंसदि = जनसमूहमें; अध्यात्मज्ञाननित्यत्वम् = अध्यात्मज्ञानमें नित्य स्थिति; अन्यथा = विपरीत; अदम्भित्वम् = दम्भाचरणका अभाव; आर्जवम् = मन वाणीकी सरलता; आत्मविनिग्रहः = आत्मसंयम।

६४

सर्वतः पाणिपादम् = सब ओरसे हाथ पैर वाला; सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् = सब ओरसे नेत्र, सिर और मुखवाला; सर्वतः श्रुतिमत् = सब ओरसे कानवाला; आवृत्य = व्याप्त करके; सर्वेन्द्रियगुणाभासम् = जिसमें सब इन्द्रियोंके गुणोंका आभास होता है; सर्वेन्द्रियविवर्जितम् = इन्द्रियोंसे रहित; सर्वभृत् = सबको धारण करने वाला; गुणभोक्तृ = गुणोंका भोक्ता; अन्तः = भीतर; सूक्ष्मत्वात् = सूक्ष्म होनेसे; दूरस्थम् = दूर; विभक्तम् इव = पृथक्-पृथक्की भाँति; भूतभर्तृ = जीवोंका धारण-पोषण करनेवाला; ग्रसिष्णु = संहार करनेवाला; प्रभविष्णु = सबको उत्पन्न करने वाला; ज्ञानम् = ज्ञानस्वरूप; ज्ञानगम्यम् = तत्त्वज्ञानसे प्राप्त होनेवाला; हृदि = हृदयमें; तिष्ठति = स्थित है; बहिः = बाहर; अचरम् चरम् = स्थावर और जंगम; अविज्ञेयम् = जाननेमें नहीं आता; अन्तिके = अति समीपमें; ज्ञेयम् = जाननेके योग्य; विष्ठितम् = स्थित है।

६५

समलोष्टाश्मकांचनः = मिट्टी, पत्थर और स्वर्णमें समान भाववाला; तुल्यनिन्दात्मसंस्तुति = अपनी निन्दा-स्तुतिमें समान भाववाला; सर्वारम्भपरित्यागी =

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पूर्ण आरम्भोंमें कर्तापनके अभिमानसे रहित, संकल्पमात्रका जिसने त्याग किया है।

६६

निर्मानमोहा = अहंकार और मोहसे मुक्त; जितसंगदोषाः = जिसने आसक्ति रूप दोषको जीत लिया है; विनिवृत्तकामाः = सब प्रकारकी कामनाओंसे छूटे हुए; द्वन्द्वैः = द्वन्द्वोंसे; अमूढ़ाः = ज्ञानी पुरुष; विमुक्ताः = छूटे हुए।

६७

आदित्यगतम् = सूर्यमें स्थित; अखिलम् = सम्पूर्ण; विद्धि = जानो; भासयते = प्रकाशित करता है; चन्द्रमसि = चन्द्रमामें है; मामकम् = मेरा।

६८

अभयं = अभय, भयका अभाव; ज्ञानयोगव्यवस्थितिः = ज्ञान और योगके सम्बन्धमें निष्ठा; दमः = इन्द्रियोंका दमन; अपैशुनम् = निन्दा न करना, दूसरोंमें दोष-दृष्टि न रखना; अलोलुप्त्वम् = लोभका अभाव; ह्रीः = लज्जा; शौचम् = पवित्रता; भवन्ति = हैं, होते हैं; सत्त्वसंशुद्धिः = अन्तःकरणकी शुद्धि; आर्जवम् = सरलता; मार्दवम् = कोमलता; अचापलम् = अचंचलता, दृढ़ता; नातिमानिता = निरभिमानपन; अभिजातस्य = प्राप्त हुए मनुष्यके लक्षण।

६९

दम्भः = पाखण्ड; पारुष्यम् = निष्ठुरता, कठोर वाणी; दर्पः = घमण्ड; आसुरीम् = आसुरी।

७०

असत्यम् = मिथ्या; आहुः = कहते हैं; अपरस्परसंभूतम् = स्त्री-पुरुषके परस्पर संयोगसे उत्पन्न हुआ; किम् अन्यत् = इसके सिवाय और क्या? अप्रतिष्ठम् = आश्रयसे रहित; अनीश्वरम् = बिना ईश्वरके; कामहैतुकम् = विषय-भोग जिसका हेतु हो।

७१

दम्भमानमदान्विताः = दम्भ, मान और मदसे युक्त हुए; दुष्पूरम् = कभी न पूर्ण होनेवाली; प्रवर्तन्ते = बर्तते हैं, आश्रित्य = आसरा लेकर; प्रलयान्ताम् = मरणकाल तक; कामोपभोगपरमाः = विषय भोगोंके भोगनेमें तत्पर; गृहीत्वा =

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिथी...... क्र०सं० 1748 भारती पुस्तकालय
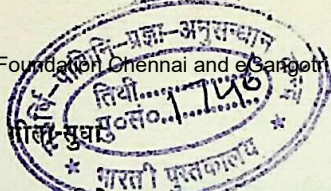
ग्रहण करके; कामम् = कामनाओंका; अपरिमेयाम् = अनन्त; एतावत् = इतना ही है; निश्रिताः = माननेवाले; अन्यायेन = अन्यायपूर्वक; लब्धम् = पाया है; अभिजनवान् = कुलीन सम्बन्धियोंवाला; आढ्यः = धनवान; दास्यामि = दान करूँगा; अनेकचित्तविभ्रान्ता = अनेक प्रकारसे भ्रमित हुए चित्तवाले; मोहजालसमावृताः = मोहरूप जाल में फँसे हुए; प्रसक्ताः = अत्यन्त आसक्त; पतन्ति = गिरते हैं; ईहन्ते = चेष्टा करते हैं; कामभोगार्थम् = विषयभोगके लिए; संचयान् = संचयके लिए; अपरान् = दूसरोंको; यक्ष्ये = यज्ञ करूँगा; विमोहिताः = मोहित रहते हैं; अशुचौ = अपवित्र ।

७२

त्रिविधम् = तीन प्रकारके; त्रयम् = तीनोंको; नरकस्य = नरकके; त्यजेत् = त्याग देना चाहिए ।

७३

विवर्धनाः = बढ़ानेवाले; स्निग्धाः = चिकने; रस्याः = रसयुक्त; हृद्याः = हृदयको प्रिय ।

७४

अत्युष्ण = अति गरम; राजसस्य = राजस पुरुषको; विदाहिनः = दाहकारक; इष्टाः = प्रिय होते हैं ।

७५

यातयामम् = पहर भरसे पड़ा हुआ; पर्युषितम् = बासी; अमेध्यम् = अपवित्र; गतरसम् = नीरस; पूति = दुर्गन्धयुक्त ।

७६

अफलाकांक्षिभिः = फलको न चाहनेवाले व्यक्ति द्वारा; विधिदृष्टः = शास्त्रविधिके अनुसार; इज्यते = किया जाता है; यष्टव्यम् एव = करना ही कर्तव्य है ।

७७

अभिसन्धाय = चाहते हुए; विद्धि = जान; दम्भार्थम् एव = केवल दम्भके लिए; यत् = जो ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७८

अदक्षिणम् = विना दक्षिणाके; असृष्टान्नम् = अन्नदानसे रहित; परिचक्षते = कहते हैं ।

७९

देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं = देवता, ब्राह्मण, गुरु व विज्ञ का पूजन; आर्जवम् = सरलता ।

८०

अनुद्वेगकरम् = जिससे उद्वेग न हो; अभ्यसनम् = अभ्यास; वाङ्मयम् = वाणीका ।

८१

मनःप्रसाद; = मनकी प्रसन्नता; आत्मविनिग्रहः = आत्मसंयम; सौम्यत्वम् = शान्तभाव; भावसंशुद्धिः = अन्तःकरणकी पवित्रता ।

८२

अफलाकांक्षिभिः = फलको न चाहने वाले; परया = परम; परिचक्षते = कहा जाता है; त्रिविधम् = तीन प्रकार के; तप्तम् = किये हुए ।

८३

सत्कारमानपूजार्थम् = सत्कार, मान और पूजाके लिए; अध्रुवम् = अनिश्चित; चलम् = क्षणिक ।

८४

मूढग्राहेण = अविवेकपूर्ण दुराग्रहसे; परस्य = दूसरेका; पीडया = पीड़ा सहित; उत्सादनार्थम् = अनिष्ट करनेके लिए ।

८५

दातव्यम् = दान देना कर्तव्य है; दीयते = दिया जाता है; अनुपकारिणे = प्रत्युपकारकी इच्छा न रखकर; स्मृतम् = कहा गया है ।

८६

प्रत्युपकारार्थम् = प्रत्युपकारके प्रयोजनसे; उद्दिश्य – उद्देश्य रखकर; परि-क्लिष्टम् = क्लेशपूर्वक ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८७

असत्कृतम् = अपमानपूर्वक; अवज्ञातम् = तिरस्कारके साथ; अपात्रेभ्यः = अपात्रको; अदेशकाले = अयोग्य देश कालमें।

८८

काम्यानाम् = कामनावाले, सकाम; न्यासम् = त्यागको; प्राहुः = कहते हैं; कवयः—पण्डितजन; विचक्षणाः = विचारकुशल, बुद्धिमान लोग।

८९

न त्याज्यम् = त्यागनेके योग्य नहीं हैं; पावनानि = चित्तकी शुद्धि करनेवाले, पवित्र करनेवाले; मनीषिणाम् = विवेकी मनुष्योंको, बुद्धिमानोंको।

९०

नियतस्य कर्मणः = नियत कर्मका, कर्तव्य कर्मका; न उपपद्यते = उचित नहीं है; परिकीर्तितः = कहा गया है।

९१

कायक्लेशभयात् = शारीरिक कष्टके भयसे; कृत्वा = करके भी; लभेत् = पाता; त्यागफलम् = त्यागके फलको।

९२

नियतम् = नियत; संगम् = आसक्ति; क्रियते = किया जाता है; मतः = माना गया है।

९३

देहभृता = देहधारी जीवके लिए; त्यक्तुम् = त्याग किया जाना; अभिधीयते = कहा जाता है ; न शक्यम् = शक्य नहीं है; अशेषतः = पूर्णरूपसे।

९४

सर्वकर्मणाम् = सब कर्मोंकी; सिद्धये = सिद्धिके; निबोध = जान; प्रोक्तानि = कहे गये हैं; कर्ता = करनेवाला; करणम् = करण, साधन; पञ्चमम् = पाँचवाँ; पञ्च = पाँच; कारणानि = कारण हैं; सांख्ये = सांख्यशास्त्रमें; अधिष्ठानम् = आधार, शरीर; पृथग्विधम् = भिन्न-भिन्न प्रकारकी; दैवम् = दैव।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९५

मुक्तसङ्गः = आसक्तिसे रहित; धृत्युत्साहसमन्वितः = धैर्य और उत्साहसे युक्त; सिद्ध्यसिद्ध्योः = सिद्धि असिद्धिमें; निर्विकारः = विकारोंसे रहित (सुख-दु:ख आदि); अनहंवादी = अहंकारसे रहित ।

९६

यतः = जिस (परमात्मा) से; भूतानाम् = जीवोंकी; इदम् सर्वम = यह सब जगत्; तम् = उस (परमात्मा) को; अभ्यर्च्य = पूजकर; प्रवृत्तिः = उत्पत्ति हुई है; येन = जिससे; ततम् = व्याप्त; स्वकर्मणा = अपने स्वाभाविक कर्म द्वारा; विन्दति = प्राप्त करता है ।

९७

सहजम् = स्वाभाविक; त्यजेत् = त्यागना चाहिए; दोषेण = दोषसे; सदोषम् = दोषयुक्त; सर्वारम्भाः = सब ही कर्म; आवृताः = आवृत हैं, ढके हैं ।

९८

मन्मनाभव = मुझमें मनवाला हो; मद्याजी = मेरी पूजा करने वाला; मेरे निमित्त यज्ञ करनेवाला; नमस्कुरु = प्रणाम कर; प्रतिजाने = प्रतिज्ञा करता हूँ; मद्भक्तः = मेरा भक्त हो; एष्यसि = प्राप्त होगा; मे = मेरा ।

९९

सर्वधर्मान् = सब धर्मोंको; माम् एकम् = एक मेरी ही; सर्वपापेभ्यः = सब पापोंसे; मा शुचः = शोक मतकर; परित्यज्य = त्यागकर; व्रज = आ जा; मोक्षयिष्यामि = मुक्तकर दूँगा ।

१००

अध्येष्यते = पढ़ेगा, अभ्यास करेगा; धर्म्यम् संवादम् = धर्म संवादको; ज्ञानयज्ञेन = ज्ञान यज्ञसे; स्याम् = होऊँगा; श्रृणुयात् अपि = श्रवण भी करेगा; प्राप्नुयात् = प्राप्त करेगा; इमम् = इस; आवयोः = हमारा; इष्टः = पूजित; अनसूयः = दोषदृष्टिरहित; पुण्यकर्मणाम् = पुण्यात्माजनोंके ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोकप्रिय गीता

गीता दर्शन यथार्थवादी है। जीवन का ऊँचा से ऊँचा लक्ष्य रखते हुए भी गीता का जीवन दर्शन वास्तविक है। गीता द्वारा निर्देशित मार्ग पर सब चल सकते हैं। स्त्री-पुरुष, ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र, हिन्दू-अहिन्दू सभी गीता के बताए रास्ते पर चलकर परमगति पा जाते हैं। मुक्ति कर्मोंका त्याग करने से नहीं मिलती, कर्मकी आसक्ति और फलासक्ति के त्याग से मिलती है। आसक्ति और फलेच्छा का त्याग बहुत ऊँचा लक्ष्य है, पर व्यवहारिक है। कर्मोंका सर्वथा त्याग अव्यवहारिक है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ॐ

गीता-माता को प्र[illegible]

मेरी माता को प्रणाम।
गीता माता को प्रणाम॥

है धर्मशास्त्रों का सार।
सुपंथ का खोले द्वार॥

छोड़ो आसक्ति, न कर्म।
निष्काम कर्म ही धर्म॥

त्यागा जिसने स्वकर्म।
उसका पथ दुर्गम॥

जिसे मिला है जो काम।
पूरा कर पूजे श्याम॥

करो यज्ञ तप दान।
लगाओ ईश में ध्यान॥

करो सबका सम्मान।
सबमें है भगवान॥

मेरी माता को प्रणाम।
गीता माता को प्रणाम।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.